राजभाषा कार्यान्वयन की वार्षिक पत्रिका

अंक -1 सितम्बर 2019

प्रेरणा – गृह पत्रिका

मुख्य संरक्षक

प्रो. संतोष कपुडिया
निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संरक्षक

डॉ. के. बालाजी राव
सलाहकार (प्र)

डॉ. आलोक के. पॉल
उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्री. के.एम. श्रीधर
प्रशासनिक अधिकारी

संपादक
श्रीमती एम. वाणी सत्यनारायण
हिंदी अधिकारी

सहयोग
श्रीमती एन. हेममालिनी
एस एस ए

प्रकाशक

सी एस आई आर – संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केंद्र

तरमणी, चेन्नै – 600 113.

दूरभाष: 044 - 22549201, 22549104

~ विषय सूची ~

क्र. सं	विषय	लेखक / कवि
1.	सम्पादक के कलम से	
2.	सी एस आई आर के महानिदेशक का संदेश	
3.	संयुक्त सचिव का संदेश	
4.	निदेशक का संदेश	
5.	सी एस आई आर मुख्यालय के हिंदी अधिकारी का संदेश	
6.	प्रार्थना	डॉ. अनंदवल्ली
7.	विदाई गीत	जितेन्द्र कुमार
8.	देश भक्ति गीत	जितेन्द्र कुमार
9.	व्यक्तित्व विकास के लिए 10 ज़बरदस्त टिप्स	आर. रघुरामन
10.	सबसे बड़ा ज्ञानी	डॉ. अमर प्रकाश
11.	महासागरीय जलधाराऐं: कुछ तथ्य	कु. झलक वशिष्ठ, डॉ. अमर प्रकाश की पुत्री
12.	कौन सा ग्रह किस रंग का है	कु. आयुषी वशिष्ठ, डॉ. अमर प्रकाश की पुत्री
13.	मजेदार पहेलियाँ	कु. आयुषी वशिष्ठ, डॉ. अमर प्रकाश की पुत्री
14.	पानी बचाने के बारे में लेख	वीरभद्रन चंद्रन
15.	जल प्रदूषण को रोकने के लिए डीओ, बीओडी और सीओडी माप का महत्व	डॉ. सी. सेतुरामन
16.	फूलों की घाटी की सैर	डॉ. एस. विजयलक्ष्मी
17.	सीएसआईआर-एसईआरसी में हाइपर कन्वर्ज इंफ्रास्ट्रक्चर (HCI)	डॉ. एस. विजयलक्ष्मी
18.	वर्तमान में सीएसआईआर एनएमएल-मद्रास सेंटर, चेन्नै की अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ	डॉ. टी. वी. विजय कुमार
19.	सीएसआईआर में मेरा सफ़र	एस. शोभना
20.	छात्र और अनुशासन	पी. वासुदेवन
21.	ताजमहल	पी. वासुदेवन
22.	विश्व हिंदी दिवस – 10 जनवरी	एम. वाणी सत्यनारायण
23.	गणतंत्र का महा नृत्य – आम चुनाव	डॉ .एन .सुधाकर
24.	कहानी	एस. वैभव, श्री वी. श्रीनिवासन का पुत्र

25.	धर्म निरपेक्षता की महत्व	कु. यशश्विनी, डॉ. बालाजी राव की पुत्री
26.	बंदर	पराग राजेंद्र रोकड़े, श्री राजेंद्र पी. रोकडे का पुत्र
27.	पेड़ों का महत्व	श्री राजेंद्र पी. रोकडे
28.	रंगीली तितली	ईशा राजेंद्र रोकड़े, श्री राजेंद्र पी. रोकडे की पुत्री
29.	सीवन द नेचर के लिए ले जानी वाली शपथ – समय की आवश्यकता	आर. अमोर्धवल्ली
30.	सूचना का अधिकार अधिनियम, 2004	पी . सुरेश
31.	भारत में बाल श्रम की समस्या	पी . प्रिया
32.	जैव विविधता	एम . मैमून मोघल
33.	मंजिले चाहे कितनी भी ऊँची या कठिन हों	एम . मैमून मोघल
34.	हिंदी शब्द खोज	एम . मैमून मोघल
35.	सभी ग्लिटर गोल्ड नहीं	के. वेंकटेस्वरी
36.	"हम हिंदुस्तानी सो रहे हैं "	प्रभात रंजन प्रेम
37.	"हिंदुस्तानी का पिघला मन"	प्रभात रंजन प्रेम
38.	वाक्य-शुद्धि	हिंदी अनुभाग
39.	मुहावरे	हिंदी अनुभाग
40.	राजभाषा से संबंधित कुछ मुख्य बातें	हिंदी अनुभाग
41.	तकनीकी शब्द सूची	हिंदी अनुभाग
42.	हिंदी पक्ष समारोह 2018	हिंदी अनुभाग
43.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	हिंदी अनुभाग

पत्रिका में व्यक्त विचार, लेखकों / रचनाकारों के निजी विचार हैं |

~ संपादक की कलम से ~

निदेशक महोदय के मार्गदर्शन, भरपूर प्रोत्साहन और प्रेरणा से 'प्रेरणा' का पहला अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे गर्व महसूस हो रहा है|

भाषा का विकास मनुष्य के विकास से जुड़ा है और राजभाषा का विकास पूरे समाज, समग्र राष्ट्र के विकास से जुड़ा है| इसीलिए अब आवश्यकता है अपनी राजभाषा में कार्य करने की, उसे समुचित स्थान देने की| इसी महत्तम उद्देश्य से इस पत्रिका का शुभारंभ किया गया है |

हमारा केंद्र दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित होने के बावजूद इसके अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति अदम्य उत्साह और जोश देखने को मिलता है| इसके ज्वलंत उदाहरण है:- इस पत्रिका में उनके द्वारा लिखे गए लेख और हिंदी पक्ष समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में भाग लेना। हिंदी के प्रति उनके जोश, उत्साह और लगन को बनाए रखने, संवर्धित करने, संवारने और साथ ही उन्हें सृजनशील बनाने का गुरुतर दायित्व यह पत्रिका निभाती है।

इसके साथ-साथ हम वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों के फलों को भी आम जनता को हिंदी के माध्यम से पहूँचाने के लिए निरंतर कार्यरत हैं और निष्ठा के साथ इस दायित्व को निभा रहे हैं।

यह मेरे लिए हर्ष और गौरव की बात है कि राजभाषा हिन्दी के प्रति हमारे कार्यालय की प्रतिबध्दता को साक्षर रूप देने केलिए "प्रेरणा" ई-गृह पत्रिका का विमोचन किया जा रहा हैं। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन केलिए अपना बहुमूल्य समय निकालकर लेख, कविता इत्यादि प्रस्तुत किए लेखकों का मैं तहे दिल से अभिनंदन करती हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में भी राजभाषा के प्रति आपका सहयोग और आपका प्रेम ऐसे ही मिलता रहेगा ।

भारत सरकार की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने हमारे कार्मिकों को प्रेरणा और प्रोत्साहित करने केलिए " प्रेरणा " का प्रकाशन करने का निश्चय किया। इस पत्रिका के प्रकाशन केलिए हमारे सहकर्मियों से प्राप्त तकनीकी लेखों और सृजनात्मक रचनाओं का सबूत देकर मैं गर्व के साथ कह सकती हूँ कि हमारे कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन केलिए हमारे निरंतर प्रयासों के सफल परिणाम निकले हैं ।

आशा करती हूँ कि " प्रेरणा " का यह अंक आप सब पाठकों को पसंद आएगा और आप सबकी प्रेरणात्मक प्रतिक्रिया एवं सुझाव हमारी "प्रेरणा " के अगले अंकों को बेहत्तर बनाने केलिए सहायक सिध्द होंगे।

चलो , हम सब अपनाएँ.....

<u>घर में मातृभाषा और कार्यालय में राजभाषा</u>

(एम .वाणी सत्यनारायण)
हिंदी अधिकारी
सी एस आई आर – एस ई आर सी

~ सी एस आई आर के महानिदेशक का संदेश ~

डॉ. शेखर चिं. मांडे
एफएनए, एफएएससी, एफएनएएससी
सचिव
वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग तथा
महानिदेशक
Dr. Shekhar C. Mande
FNA, FASc, FNASc
Secretary
Department of Scientific & Industrial Research and
Director General

भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद
वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग
Government of India
Ministry of Science and Technology
Council of Scientific & Industrial Research
Department of Scientific & Industrial Research

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एसईआरसी), चेन्नई हिन्दी पक्ष समारोह-2019 के दौरान हिन्दी में ई-गृह पत्रिका "प्रेरणा" के पहले अंक का विमोचन कर रही है।

पत्रिका ऐसी सरिता होती है जिससे अनुभव, चिंतन और ज्ञान-विज्ञान की कलकल धारा निरंतर प्रवाहित होती रहती है। हिन्दीतर भाषी कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। आशा है विविधताओं से परिपूर्ण यह पत्रिका हिन्दी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

(शेखर चिं. मांडे)

नई दिल्ली
23 सितम्बर 2019

CSIR-SERC
ENGINEERING SUSTAINABLE STRUCTURES

~ सी एस आई आर के संयुक्त सचिव (प्र.) का संदेश ~

के. आर. वैधीस्वरन
K. R. VAIDHEESWARAN
संयुक्त सचिव
Joint Secretary

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्
अनुसंधान भवन, 2, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
COUNCIL OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH
Anusandhan Bhawan, 2, Rafi Marg, New Delhi-110001

संदेश

हर्ष का विषय है कि सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नै हिंदी पक्ष समारोह, 2019 के अवसर पर हिंदी ई-गृह पत्रिका "प्रेरणा" निकाल रहा है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेत होने के नाते हम सबका यह परम कर्तव्य है कि कागज के दुरुपयोग को रोका जाए। ई-पत्रिका प्रकाशन की इस पहल का मैं स्वागत करता हूं। मेरा मानना है कि वह दिन दूर नही जब सभी प्रकार की पठन सामग्री ई-फार्म में ही मौजूद होगी। इससे अधिक से अधिक वृक्षों को कटने और कागज के दुरुपयोग को रोका जा सकेगा। आशा करता हूं कि इस ई-गृह पत्रिका के नामचयन की तरह इसमें छपने वाले लेख भी रोचक होंगे।

इस ई-गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े केन्द्र के सभी कार्मिकों को मेरी ओर से बधाई।

(के.आर.वैधीस्वरन)

Tel. : 91-11-23716582, 23351745, Fax : 91-11-23714788, E-mail : jsa@csir.res.in

प्रो.संतोषकपुडिया,
PhD, FNA, FNAE, FASc, FNASc
जे.सी. बोसराष्ट्रीय अध्येता

~ संदेश~

हिन्दी पक्ष समारोह – 2019 के अवसर पर आप सबको हार्दिक बधाई देते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। इस विशेष अवसर पर सी एस आई आर – एस ई आर सी **"प्रेरणा"** नामक ई - गृह पत्रिका का प्रकाशन कर रही है, जिसके लिए मैं आप सब को हार्दिक बधाई देता हूँ. हमारे केंद्र के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों में अंन्तर्निहित बहुमुखी प्रज्ञा, प्रतिभा, सृजनात्मकता एवं साहित्यिक जानकारी का एक साक्षार सबूत है **"प्रेरणा"** ।

भारत सरकार की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है। इसी को ध्यान में रखते हुए, एक ओर हम संरचनात्मक अभियांत्रिकी के सीमांत एवं अत्याधुनिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट अनुसंधानों द्वारा महत्वपूर्ण क्षेत्रों का सृजन करते हुएसामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धारणीय प्रौद्योगिकियों का विकास कर रहे हैं और दूसरी ओर भारत सरकार की राजभाषा नीति को शतप्रतिशत अमल करने केलिए हम पूरी लगन एवं ईमानदारी से अथक प्रयास कर रहे हैं. पिछले तीन वर्षों में, टॉप रेटेड प्रकाशनों में प्रकाशित हमारे शोध आउटपुट में 50% से भी अधिक वृद्धि हुई है,व्यावसायीकृत प्रौद्योगिकियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है और उद्योग को हमारी परामर्श और तकनीकी सेवाओं से और प्रायोजित अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं से हमारे बाहरी नकदी प्रवाह में 100% की वृद्धि हुई है।इसी तरह, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में हमारे प्रयास आजकल कई गुना बढ़ गया है। राजभाषा नीती के कार्यान्वयन मेंहमारे इन अथक प्रयासों का एक बखूबी उदाहरण है – इस केंद्र द्वारा पिछले वर्ष आयोजित राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी। कार्यालय के प्रशासनिक कार्यों में भी हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है और इसके प्रोत्साहन मेंहर वर्ष हिंदी पक्ष के दौरान कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।सबसे महत्वपूर्ण बात,यह पत्रिका हमारे सभी कर्मचारियों के महान प्रयासों की गवाही देती है ।

"प्रेरणा "के इस अंक में लेख प्रस्तुत किए लेखकों एवं संपादक मंडल का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ और पत्रिका की सफलता के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

स. कपुडिया

(प्रो. संतोष कपुडिया)
निदेशक, सी एस आई आर – एस ई आर सी

एन .आनंदवल्ली
वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ प्रार्थना ~

हे भगवान!

मेरे अन्दर ही, है तू।

मुझे कभी गर्वी मत बनने देना

तेरे हाथ में, बच्चों की तरह खेलू मैं।

और, खेल के अंत तक, तू मुझे न छोड़ना।

हिन्दी भाषा के लिए मेरा प्रेम सब हिन्दी प्रेमी जानते हैं। - महात्मा गाँधी

जितेन्द्र कुमार
यू .जी .परियोजना छात्र
सी.एस.आई.आर. - एस.ई.आर.सी

~ विदाई गीत ~

अतिथिवर ऐसे ना जाना होगा|
रोकेंगे राही रुक जाना होगा ||
आप चले जाएंगे बहार चली जायेगी|
उजड़ेगा गुलशन ये फूल मुरझाएंगे ||
बाग बना विराना होगा|
रोकेंगे राही रुक जाना होगा ||
जाते हैं तो जाये पर जाके नहीं आयेंगे|
रोकना भी चाहा पर रोक नहीं पायेंगे ||
वादों का करार कर जाना होगा|
रोकेंगे राही रुक जाना होगा ||

"क" क्षेत्र: उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखण्ड, अंडमान-निकोबार व दिल्ली।

"ख" क्षेत्र: महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब व चण्डीगढ़ संघ-राज्य।

"ग" क्षेत्र: आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, गोवा, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर, केरला, नागालैंड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, दादर एवं नगर-हवेली, दमण-दीव, लक्ष्यदीव, पाण्डिचेरी।

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है। - अमरनाथ झा

जितेन्द्र कुमार
यू .जी .परियोजना छात्र
सी.एस.आई.आर. - एस.ई.आर.सी

~ देश भक्ति गीत ~

कवने विधि से मिलल देशवा के आज़ादिया ---2
ओके गईला भुलाय देहला मन से विसार हमरे नेता जी ---- 2
कवने विधि से..... 2
आज के नेता देश विक्रेता बस कुर्सी की चाह है,
हर सांसद मंत्री के घर मे अपराधीन की राह है ||
कवने विधि से..... 2
देशवा के खातिर फासी झूले है ललनवा.. 2
देशवा के ख़ातिर ओके गईला भुलाय देहला मन से निकाल हमरे नेता जी... 2
एही देशवा के ख़ातिर राणा घास की रोटी खाये है|
अंग्रेजो के लाठी डंडा लाज़पत जी पाये है ||2
कवने विधि से 2

आर. रघुरामन, निजी सचिव
सी एस आई आर – एस ई आर सी

~ व्यक्तित्व विकास के लिए 10 ज़बरदस्त टिप्स ~

1. **अपने ऊपर विश्वास रखें**
   जीवन में अगर आप कुछ भी करना चाहते हैं तो उसकी चाबी है अपने ऊपर विश्वास रखना। अपने व्यक्तित्व विकास के लिए अपने ऊपर विश्वास रखना पहला कदम है। अपनी काबिलीयत पर कभी भी शक ना कीजिये। अच्छी सफलता से जुडी प्रेरक और प्रेरणादायक कहानियाँ पढ़ें इससे जीवन में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है।

2. **अपना दिमाग खुला रखें**
   अपने अन्दर अच्छा व्यक्तित्व विकास लाने का एक और सबसे बड़ा कार्य है अपने विश्वदृष्टि में बदलाव लाना। दूसरों की बात को ध्यान से सुनें और अपने दिमाग के बल पर अपना सुझाव या उत्तर दें। अपने फैसलों को खुद के दम पर पूरा करें क्योंकि दूसरों के फैसलों पर चलना या कदम उठाना असफलता का एक मुख्य कारण है।

3. **शारीरिक भाषा में सुधार की आवश्यकता**
   व्यक्तिगत विकास के लिए शारीरिक भाषा में सुधार लाना बहुत आवश्यक है। हर चीज, चाहे वह आपका खाने का तरीका हो, चलने का तरीका हो, बात करने का हो या बैठने का तरीका सब कुछ बॉडी लैंग्वेज से जुडा है। जब भी बैठें सभी समस्या को भूल कर आराम से बैठें और जब भी आप किसी से बात करें आंख से आंख मिला कर बात करें।

4. **अपने अन्दर सकारात्मक सोच जागृत करें**
   चाहें आपकी बातें हो या आपके कार्य, सभी जगह सकारात्मक सोच का होना अच्छे व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत आवश्यक है। सकारात्मक विचारों से आत्मविश्वास बढ़ता है और व्यक्तित्व को बढाता है। जीवन में कई प्रकार की ऊँची-नीची परिस्तिथियाँ आती हैं परन्तु एक सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति हमेशा सही नज़र से सही रास्ते को देखता है।

यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो मछली से सीखें जो स्वदेश (पानी) के लिए तड़प-तड़प कर जान दे देती है।
- सुभाषचंद्र बोस

5. **नए लोगों से जुड़ें**

ज्यादा से ज्यादा नए लोगों से मिलना और अलग-अलग प्रकार के लोगों से मिलना जीवन के एक नये स्तर पर जाना है। इससे जीवन में संस्कृति और जीवन शैली से जुडी चीजों के विषय में बहुत कुछ सीखने को मिलता है जो व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है।

6. **एक अच्छा श्रोता बनिए**

ज्यादातर लोग समझने के लिए नहीं सुनते, वे उत्तर देने के लिए सुनते हैं। एक अच्छा श्रोता होना बहुत कठिन है परन्तु यह व्यक्तित्व विकास का एक अहम कदम है। जब भी कोई आपसे बात करे, ध्यान से उनकी बातों को सुनें और समझें और अपना पूरा ध्यान उनकी बातों पर रखें। सीधी आँखों से ध्यान दें और इधर-उधर की बातों पर ध्यान ना दें।

हिन्दी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है। - ग्रियर्सन

डॉ. अमर प्रकाश,
प्रधान वैज्ञानिक,
सी एस आई आर – एस ई आर सी

~ सबसे बड़ा ज्ञानी ? ~

एक राजा अपने आपको सबसे बड़ा ज्ञानी और बुद्धिमान मानता था। एक दिन वो ये जानने के लिए उत्सुक हुआ कि क्या इस संसार में उससे भी अधिक ज्ञानी और बुद्धिमान कोई दूसरा है, या नहीं। यह सोचकर राजा ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि वह एक महीने में इस दुनिया के सबसे बुद्धिमान आदमी को ढूँढ कर दरबार में लाये।

राजा का आदेश पाकर मंत्री ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्ति की खोज में निकल पड़ा। महीना खत्म होने को आ गया, लेकिन उसे ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं मिला। मंत्री निराश होकर एक दिन घर पर बैठा था। तभी उसके बेटे ने उससे कहा – पिताजी आप परेशान न हो। महीना खत्म होने से पहले मैं आपको एक ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्ति लाकर दे दूँगा।

महीना खत्म होने पर मंत्री के बेटे ने अपने पिता को एक व्यक्ति से मिलवाया और कहा – पिताजी ये ही इस संसार का सबसे बड़ा ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्ति है। आप इसे दरबार में ले जाइये। मंत्री ने उस व्यक्ति की तरफ देखकर कहा – ये तो हमारा नौकर है। जो गायों की देखभाल करता है।

ये बुद्धिमान कैसे हो सकता है। बेटे ने कहा – आप मेरी बात मानिये, और, इसे ले जाइये। समय खत्म हो चुका था। मंत्री के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था। वह उस नौकर को दरबार में ले गया। राजा दरबार में मंत्री का इंतजार कर रहा था। मंत्री ने उस नौकर को राजा के सामने पेश करते हुए कहा – महाराज ये व्यक्ति ही संसार का सबसे बड़ा ज्ञानी और बुद्धिमान है।

राजा ने उस नौकर को देखकर। अपनी एक ऊँगली ऊपर उठाई। इसके जवाब में उस नौकर ने अपनी दो ऊँगली ऊपर उठा दी। इसके बाद राजा ने तीन ऊँगली ऊपर उठा दी। यह देखकर उस नौकर ने सर हिलाया और वहाँ से भागने लगा। राजा ये देखकर हँसने लगा और उसने मंत्री को एक बुद्धिमान और ज्ञानी व्यक्ति से मिलाने के लिए बहुत से उपहार दिये।

मंत्री की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। अंत में मंत्री ने राजा से पूछ ही लिया। राजा ने कहा – एक ऊँगली उठाकर मैंने उससे पूछा – क्या मैं सबसे बुद्धिमान हूँ? दो ऊँगली उठाकर उसने मुझे याद दिलाया की भगवान भी तो है। फिर मैंने तीसरी ऊँगली उठाकर पूछा – क्या कोई तीसरा भी है? उसने सर हिलाकर साफ मना कर दिया। मैं सोचता था की मैं अकेला ही बुद्धिमान हूँ। लेकिन इस व्यक्ति ने मुझे भगवान के अस्तित्व की याद दिलाई।

बँगला वर्णमाला की जाँच से मालूम होता है कि देवनागरी लिपि से निकली है और इसी का सीधा सादा रूप है। - रमेशचंद्र दत्त

दरबार खत्म होने के बाद सब अपने अपने घर जाने लगे। मंत्री उस नौकर के पास गया और उससे पूछा – राजा उससे इशारों में क्या पूछ रहा था, और वो राजा को क्या जवाब दे रहा था। नौकर ने कहा – मालिक मेरे पास सिर्फ तीन गाय हैं। जब आप मुझे दरबार में ले गये। तब राजा ने मुझे एक ऊँगली दिखाई। मुझे लगा राजा मेरी एक गाय खरीदना चाहता है।

मैंने सोचा, राजा बहुत अमीर है, इसलिए मैंने उन्हें दो गाय देने की सोची और दो ऊँगलियाँ उठा दी। इसके बाद उन्होंने तीन ऊँगलियाँ दिखाई। मुझे लगा की वे मेरी तीनों गाय खरीदना चाहते हैं। मैंने सोचा, ये तो बड़ी नाइंसाफी है। इसलिए मैं इंकार करके, वहाँ से भागने लगा। ये सब सुनकर मंत्री जी हँसने लगे, और बोले तुम घबराओ मत। तुमसे तुम्हारी गाय कोई नहीं लेगा।

दोस्तों इस कहानी के माध्यम से मैं आपको ये समझाना चाहता हूँ। की जो भी लोग ये सोचते है की वे सबसे बड़े ज्ञानी और बुद्धिमान है। असलियत में वे सबसे बड़े मुर्ख होते है। लोग उनके पीछे उनका मजाक बनाते है, और उन पर हँसते है।

www.jagran.com

'हिंदी अधिक समृद्ध और सरल भाषा'

जासं, लखनऊ : हिंदी बहुत समृद्ध और सरल भाषा है। यह अन्य भाषाओं के शब्दों को भी बड़ी सरलता से आत्मसात कर अपनी शैली में ढाल लेती है और बाद में वह शब्द हिंदी के ही लगने लगते हैं।

सीएसआइआर-भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान (आइआइटीआर) में शनिवार को हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने यह बात कही। डॉ. शर्मा ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका विष विज्ञान संदेश का विमोचन भी किया। डॉ. शर्मा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन हो रहा है। साथ ही प्रदूषण बढ़ रहा है, जिससे अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। ऐसी जीवन शैली अपनाएं, जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहे। उत्तर प्रदेश सरकार ने पर्यावरण सुधार हेतु प्रदेश में करोड़ों वृक्ष लगाए हैं। पुलिस उप महानिरीक्षक टीएन खुन्टिया ने कहा कि देश को एकता के सूत्र में बांधने में राजभाषा हिंदी का बहुत महत्व है। टीवी एवं अन्य माध्यमों से बहुत परिवर्तन आया है। हिंदी भाषा के माध्यम से आमजन तक वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी पहुंचा रहा है। संस्थान के 75 से 80 फीसद वैज्ञानिक कार्य हिंदी संचार माध्यमों में प्रकाशित हो रहे हैं। विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे और विषविज्ञान में मानव संसाधन के साथ स्वच्छ भारत अभियान, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्मार्ट गांव स्मार्ट शहर, नमामि गंगे और उन्नत भारत अभियान जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों में वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग कर सतत विकास का लक्ष्य हासल करने में मदद कर रहा है। संस्थान और सरदार पटेल पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफडेंटल एंड मेडिकल साइंसेज के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर भी हुए।

हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पत्रिका का विमोचन करते उप मुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा, डॉ आलोक धावन व अन्य अधिकारी ●जागरण

हमारी भाषा हिंदी हो...

जागरण संवाददाता, लखनऊ : अंग्रेजी भाषा को लगातार सम्मानित किया जा

हिन्दी सरल भाषा है। इसे अनायास सीखकर लोग अपना काम निकाल लेते हैं। - जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

कु. झलक
डॉ. अमर प्रकाश की पुत्री
कक्षा X , केंद्रीय विद्यालय सी. एल. आर. आई. ,
अड्यार, चेन्नई-20

~ महासागरीय जलधाराएँ: कुछ तथ्य ~

►एक निश्चित दिशा में बहुत अधिक दूरी तक महासागरीय जल की एक विशाल जलराशि के प्रवाह को महासागरीय जलधारा कहते हैं।

► समुद्री धाराएं उष्ण या गर्म (warm) अथवा शीतल या ठंडी (cold) दो प्रकार की होती हैं। गर्म धारा वह होती है जिसके जल का तापमान उसके किनारे के सागरीय जल के तापमान से अधिक होता है। इसके विपरीत ठंडी धारा में जल का तापमान किनारे के सागरीय जल के तापमान से कम होता है।

► ठण्डी जलधारा मुख्यत : ध्रुवों से भूमध्य रेखा की ओर चलती है व गर्म जलधाराऐं मुख्यत: भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर चलती हैं।

► उत्तरी गोलार्द्ध की जलधाराएँ अपनी दायीं ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध की जलधाराऐं अपनी बाईं ओर प्रवाहित होती है ! यह कारिओलिस बल (Coriolis force) के प्रभाव से होता है!

उत्पत्ति–

महासागरीय जलधारा बनने के मुख्यत :तीन कारण होते हैं –

1-प्रथम तो जल में लवण की मात्रा एक स्थान की अपेक्षा दूसरे स्थान पर बदलती है, इसलिए सागरीय जल के घनत्व में भी स्थान के साथ-साथ परिवर्तन आता है। द्रव्यों की प्राकृतिक प्रवृत्ति, जिसमें वे अधिक घनत्व वाले क्षेत्र की ओर अग्रसर होते हैं, के कारण धाराएं बनती हैं।

2-दूसरे कारण में सूर्य की किरणें जल की सतह पर एक समान नहीं पड़तीं। इस कारण जल के तापमान में असमानता आ जाती है। इसके कारण संवहन धारा (कन्वेक्शन करंट) पैदा होती है।

3-तीसरा कारण सागर की सतह के ऊपर बहने वाली तेज हवाएं होती हैं। उनमें भी जल में तरंगें पैदा करने की क्षमता होती है। ये तरंगें पृथ्वी की परिक्रमा से भी बनती हैं। इस घूर्णन के कारण पृथ्वी के उत्तरी हिस्से में घड़ी की दिशा में धाराएं बनती हैं।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। - महात्मा गाँधी

प्रमुख जलधाराएँ

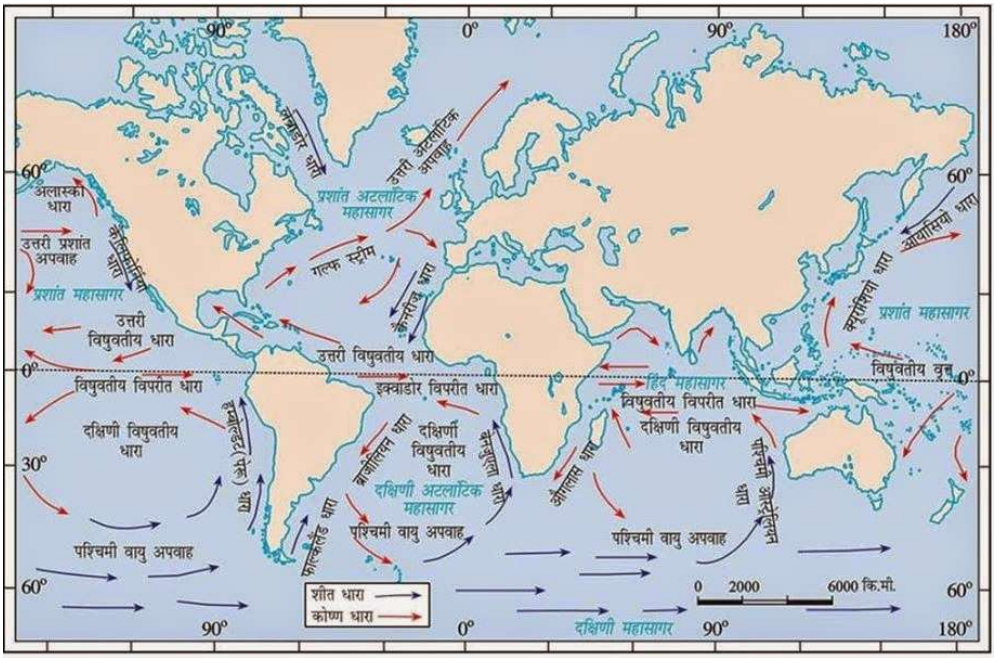

►अटलांटिक महासागर की जलधाराएँ

खाड़ी के उत्तर स्ट्रीम —- गर्म
उत्तरी अटलांटिक धारा —- गर्म
ब्राजील धारा — -गर्म
बेंगुला धारा- ठंडी
कैनरी धारा—- ठंडी
लेब्राडोर धारा—-ठंडी
ग्रीनलैंड धारा —-ठंडी
फ़ाकलैंड धारा—-ठंडी

संस्कृत माँ, हिन्दी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है। - डॉ. फादर कामिल बुल्के

►प्रशांत महासागर की जलधाराएँ

अलास्का की धारा—-गर्म
क्यूरोशियो (जापान) धारा—-गर्म
उत्तरी प्रशांत महासागर धारा—- गर्म
पूर्व ऑस्ट्रेलियाई धारा —- गर्म
इक्वेटोरियल धारा —- गर्म
हम्बोल्ट (पेरू) धारा —-ठंडी
कैलीफोर्निया की धारा —- ठंडी
क्युराइल धारा- -ठंडी

► हिंद महासागर की जलधाराएँ

अगुलहास धारा —- गर्म

ठंडी जल धाराओं को याद रखने की GK TRICKS:

"हम बोले ग्रीन बगुला क्यों केला FAK (फ़ेंक रहा है)
हम बो – हम्बोल्ट की धारा
ले – लेब्रोडोर की धारा
ग्रीन – ग्रीनलैंड की धारा
बगुला – बेंगुऐला की धारा
क्यों – क्युराइल की धारा
केला – कैलीफ़ोर्निया की धारा
F – फ़ाकलैंड की धारा
A – आखोस्टक की धारा
K – कनारी की धारा
इस तरह आपको ठंडी जलधाराऐं याद हो जाऐंगी और बाकी बची हुई जलधाराएँ गरम होंगी ! तो दोस्तों है न एकदम शानदार ट्रिक!!

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है। - महात्मा गाँधी

कु. आयुषी वशिष्ठ, डॉ. अमर प्रकाश की पुत्री
कक्षा - ७ , केंद्रीय विद्यालय सी. एल. आर. आई. ,
अड्यार, चेन्नई-20

~ कौन सा ग्रह किस रंग का है ~

नमस्कार दोस्तों, ग्रहों के Colour के बारे में अक्सर परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं कि कौन सा ग्रह किस रंग का है !आज हम आपको एक ऐसी ट्रिक बताऐंगे जिससे कि आप प्रमुख ग्रहों के रंगों को आसानी से याद रख पाऐंगे-
तो इसके लिये आप नीचे दी हुई ट्रिक को कविता की तरह याद कर लीजिये –

TRICK – **हम है नीले , पति है पीले , शुक्र बहन चमकीली है !**
शनि है काला , लाल है मंगल , और अरुण पर हरियाली है !

1.हम है नीले – पृथ्वी (हम) – नीला ग्रह (जल के कारण)
2.पति है पीले – बृहस्पति (पति) – पीला ग्रह (SO_2 के कारण)
3.शुक्र बहन चमकीली है – शुक्र – चमकीला ग्रह (गर्म होने के कारण)
4.शनि है काला – शनि – काला ग्रह (N_2 के कारण)
5.लाल है मंगल – मंगल – लाल ग्रह (Iron Oxide के कारण)
6.और अरुण पर हरियाली है – अरुण – हरा ग्रह मीथेन के कारण)

तो देखा न दोस्तों, है न बिल्कुल आसान सी ट्रिक, और अब आप इसे कभी नही भूलेंगे!

नाच न जाने, आँगन ठेढ़ा

Literal Meaning: Knows no dance, claims the stage is tilted.

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी ही जोड़ सकती है। - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

कु. आयुषी वशिष्ठ पुत्री डॉ. अमर प्रकाश
कक्षा - ७ , केंद्रीय विद्यालय सी. एल. आर. आई. ,
अड्यार, चेन्नई-20

~ मजेदार पहेलियाँ ~

1. **पहेली** – हरे रंग की टोपी मेरी, हरे रंग का है दुशाला
   जब पक जाती हूँ मैं तो,
   हरे रंग की टोपी, लाल रंग का होता दुशाला
   मेरे पेट में रहती मोती की माला
   नाम जरा मेरा बताओ लाला ?

2. **पहेली** –रंग है मेरा काला
   उजाले में दिखाई देती हूँ
   अँधेरे में छिप जाती हूँ

3. **पहेली** – ना मुझे इंजन की जरूरत
   ना मुझे पेट्रोल की जरुरत
   जल्दी जल्दी पैर चलाओ
   मंजिल अपनी पहुँच जाओ

4. पहेली – सुबह सुबह ही आता हूँ
   दुनिया की ख़बरें लाता हूँ
   सबको रहता मेरा इंतजार
   हर कोई करता मुझसे प्यार

5. **पहेली** – दो आखर का नाम है मेरा
   किन्तु पाँव है चार
   उन पाँव से चल नही पाता
   पूछ पहेली हो तैयार

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है। - महात्मा गाँधी

6. **पहेली** – लोहा खींचू ऐसी ताकत है
पर रबड़ मुझे हराता है
खोई सूई मैं पा लेता हूँ
मेरा खेल निराला है।

7. **पहेली** – ऐसा बताओ कौन शैतान
नाक पर बैठे पकड़े कान\

8. **पहेली** – एक सतह रहने की इच्छा
लेकर मैं जिंदा रहता हूं
नदी-झील और ताल-तलैया
झरनों में बैठा रहता हूं ...

9. **पहेली** – है तो वह रात की रानी
आँख से उसके टपके पानी

10. **पहेली** – जंगल में इसका मायका, गांव सहर इसकी ससुराल
जब घर में आ गयी दुल्हन, उठ चला सारा बवाल

11. **पहेली** – अनगिन डाल पत्ता एक, हुआ अचम्भा उसको देख
सिर पर सजे सलोना रूप, न कुम्हलाये चाहे हो धुप

12. **पहेली** – मुँह पर सुलगा अंगारा तो, मिला पूछ से पानी
उतनी ज्यादा भड़की वह तो, जितना ज्यादा पानी

(जवाब के लिए पृ. 33 देखें)

"जो आपके साथ दिल से बात करता हो, उनको कभी दिमाग से जवाब मत देना।

वीरभद्रन चंद्रन
सहायक अनुभाग अधिकारी (सामान्य)
सीएसआईआर- संरचनात्मक इंजीनियरिंग अनुसंधान केंद्र

~ पानी बचाने के बारे में लेख ~

ये सभी के लिये बिल्कुल साफ है कि धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिये जल बहुत ही जरूरी है। जीवन जीने से संबंधित हमारी सभी क्रियाओं के लिये जल की आवश्यकता है। हम लोग धरती पर चारों तरफ़ (धरती का लगभग तीन-चौथाई भाग) से पानी से घिरे हुए हैं इसके बावजूद हम लोग भारत और दुनिया के दूसरे देशों में पानी की समस्या से जूझ रहें हैं; क्योंकि महासागर में लगभग पूरे जल का 97% नमकीन पानी है, जो इंसानों के उपयोग के लिये सही नहीं है। धरती पर मौजूद पूरे जल का केवल 3% ही उपयोग लायक है (जिसका कि 70% बर्फ की परत और ग्लेशियर के रुप में है और 1% जल ही पीने लायक पानी के रुप में उपलब्ध है)।

इसलिये, हमें धरती पर स्वच्छ जल के महत्व को समझना चाहिये और अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिये कि हम पानी की बर्बादी करने के बजाय उसे बचायें। हमें अपने स्वच्छ जल को औद्योगिक कचरे, सीवेज़, खतरनाक रसायनों और दूसरे गंदगियों से गंदा होने और प्रदूषित होने से बचाना चाहिये। पानी की कमी और जल प्रदूषण का मुख्य कारण हमेशा बढ़ती जनसंख्या और तेजी से बढ़ता औद्योगिकीकरण और शहरीकरण है। स्वच्छ जल की कमी के कारण, निकट भविष्य में लोग अपनी मूल जरुरतों को भी पूरा नहीं कर सकते हैं। भारत के कुछ राज्यों (जैसे राजस्थान और गुजरात का कुछ भाग) में महिलाएँ और लड़कियाँ साफ पानी के लिये लंबी दूर जाना पड रहा है। हाल ही में हुए अध्ययनों के अनुसार, ऐसा पाया गया कि लगभग 25% शहरी जनसंख्या को साफ पानी की पहुंच नहीं है। "जल संरक्षण, जीवन बचाओ और विश्व बचाओ "के उद्देश्य को बनाने के द्वारा सबसे अधिक उपयुक्त तरीकों के माध्यम से स्वच्छ पानी की कमी से निपटने के लिये हमें एक-साथ आने की जरुरत है।

इसलिए, वर्षा-ऋतु के दौरान विशेष रूप से पानी को बचाना हमारा प्राथमिक लक्ष्य होना है।

"ज़िंदेगी मे इतनी तेज़ी से आगे दौडो कि लोगों के बुराई के धागे आपके पैरों में ही आकर टूट जाए।"

डॉ. सी. सेतुरामन,
प्रधान वैज्ञानिक,
सीएसआईओ एकक, सीएसआईआर मद्रास काम्प्लेक्स

~ जल प्रदूषण को रोकने के लिए डीओ, बीओडी और सीओडी माप का महत्व ~

1. भंग ऑक्सीजन (डीओ)

घुलित ऑक्सीजन जल निकाय में घुलित गैसीय ऑक्सीजन (O_2) की मात्रा है। मुख्य रूप से, ऑक्सीजन वायुमंडल से सीधे अवशोषण द्वारा, **विक्षोम** और पानी के तेज प्रवाह से, या पौधे द्वारा प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से जल निकाय में प्रवेश करती है। पानी का तापमान और प्रवाह, पानी में भंग ऑक्सीजन के स्तर को प्रभावित कर सकती है। गर्म पानी की तुलना में ठंढा पानी में ऑक्सीजन आसानी से घुल जाती है।

भंग ऑक्सीजन (डीओ) निर्धारण, पानी या अपशिष्ट पानी में मौजूद घुलित ऑक्सीजन की मात्रा को मापना है । एरोबिक बैक्टीरिया और जलीय जीवन जैसे मछली को जीवित रहने के लिए घुलित ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। यदि अपशिष्ट-जल प्रक्रिया में मौजूद डीओ बहुत कम है, तो एरोबिक बैक्टीरिया जो सामान्य रूप से गंदे नाले के पानी को साफ करते है, वे मर जाएंगे। उद्योगों से समुचित उपचार के बिना नदियों में एफ्लुएंट प्रवाहित होने से नदी में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है, जिससे हजारों मछलियों और अन्य जलीय जीवों की मौत हो जाती है, जैसा कि नीचे दिए गए तस्वीरों में दिखाया गया है ।

Sahara Matsyadia river in Paradip, Odisha in August 2018

A child picks up a dead fish on the banks of the Ganga, U.P.

सतह के अच्छी गुणवत्ता वाले पानी को भंग ऑक्सीजन के साथ संतृप्त किया जाना चाहिए। डीओ स्तर में गिरावट इस बात का पहला संकेत है, कि एक जल निकाय कार्बनिक पदार्थों द्वारा प्रदूषित है। जल में डीओ स्तर जल निकाय में विद्यमान भौतिक, रासायनिक और जैव रासायनिक गतिविधियों पर निर्भर करता है और इसीलिए, यह जल निकाय की शुद्धता का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण मापदंडों में से एक है। यह आमतौर पर विंकलर विधि द्वारा निर्धारित किया जाता है, जिसमे भंग ऑक्सीजन, मैंगनीज आयनों के साथ प्रतिक्रिया कर मैंगनीज डाइऑक्साइड का अवक्षेप बनता है।

$$Mn^{2+} + O_2 \longrightarrow MnO_2 \downarrow$$

मैंगनीज डाइऑक्साइड को आयोडीन आयनों के साथ प्रतिक्रिया कराया जाता है, जब आयोडीन की मात्रा रासायनिक रूप से, मूल घुलित ऑक्सीजन की मात्रा के बराबर हो ।

$$MnO_2 + 2I^- + 4H^+ \longrightarrow Mn^{2+} + I_2 + 2H_2O$$

आमतौर पर मुक्त आयोडीन को, सोडियम थायोसालफेट के साथ टाइट्रेट करके निर्धारित किया जाता है। विंक्लेर द्वारा विकसित टिटरिमेट्रिक विधि द्वारा डीओ का निर्धारण किया जाता है।

पर्याप्त विघटित ऑक्सीजन पानी की अच्छी गुणवत्ता और जीवन के सभी रूपों के लिए आवश्यक है। घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5.0 mg/l से नीचे जाने पर जलीय जीवों के जीवन में तनाव बढ़ता है । घुलित ऑक्सीजन की कम सांद्रता अधिक तनाव उत्पन्न करती है। कुछ घंटों के लिए ऑक्सीजन का स्तर 1-2 mg/l से नीचे जाने पर बड़ी मछली मर सकती है।

2.0 जैव रासायनिक मांग (बीओडी)

बीओडी कार्बनिक सामग्री की मात्रा का मापक है, और यह दर्शाता है की संकेत देता है कि माइक्रोबियल विघटन के लिए कितना ऑक्सीजन आवश्यक होगा। बीओडी अंधेरे में 5 दिनों की अवधि में 20°C के तापमान पर पानी में बैक्टीरिया द्वारा लिया गया ऑक्सीजन को मापता है ।

कार्बनिक पदार्थ के लगातार विघटन से बीओडी का मान बढ़ता है । हालांकि, 5 दिनों के बाद नमूने में निहित अधिकांश, 70% कार्बनिक पदार्थ पहले ही विघटित हो चुके हैं। उस कारण से BOD_5, जो ऊष्मायन के 5 दिनों के बाद मापा जाता है, सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली विधि है। दूसरी ओर, यदि उद्देश्य कुल सामग्री को मापने के लिए है तो जैविक सामग्री BOD_{21} को ऊष्मायन के 21 दिनों के बाद मापा जाता है।

पानी के नमूने में मौजूद अन्य यौगिकों का ऑक्सीकरण भी ऑक्सीजन की खपत में योगदान कर सकता है। विशेष रूप से, नाइट्रिफिकेशन बीओडी की माप को प्रभावित कर सकता है, जिससे इसका मान वास्तविक से ज्यादा आकलित हो सकता है। इसे रोकने के लिए, नाइट्रिफिकेशन इनहिबिटर के उपयोग की आवश्यकता होती है।

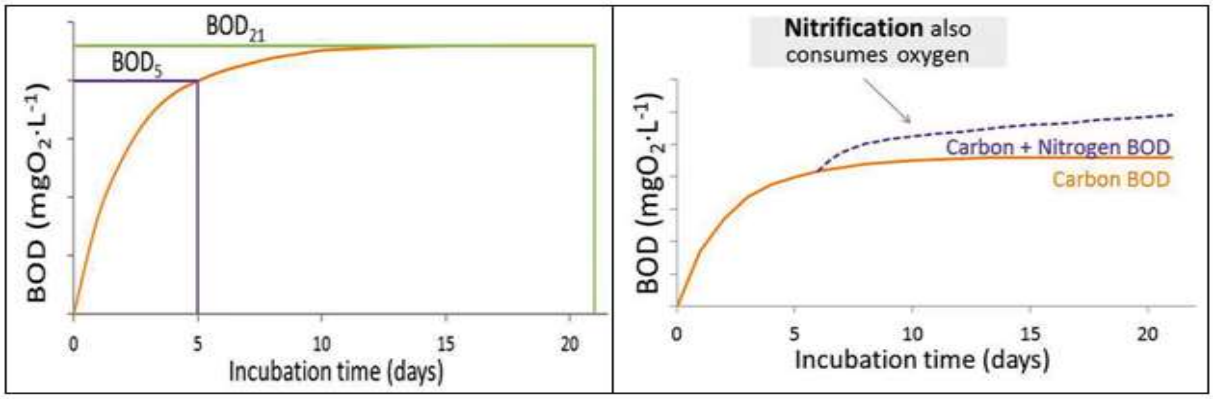

बीओडी का विश्लेषण

संक्षिप्त विश्लेषणात्मक प्रक्रिया नीचे दी गई है:

1. दो मानक 300 मिलीलीटर बीओडी की बोतलें पूरी तरह से अपशिष्ट जल से भरी होती हैं, जिसमें बीओडी को मापना होता है और बोतलों को सील कर दिया जाता है।

2. एक बोतल में ऑक्सीजन का स्तर, तुरंत निर्धारित किया जाता है।

3. अन्य बोतल को विल्कुल अंधेरे में 5 दिनों के लिए 20 डिग्री सेल्सियस पर ऊष्मायन किया जाता है, जिसके बाद इसकी ऑक्सीजन स्तर को मापा जाता है।

4. दो DO मानों के बीच का अंतर ऑक्सीजन की मात्रा है जो 5 दिनों के दौरान सूक्ष्मजीवों द्वारा सेवन किया जाता है और नमूने के BOD_5 (5-दिवसीय बीओडी) मान के रूप में रिपोर्ट किया जाता है।

डीओ के प्रकाश संश्लेषक उत्पादन की संभावना को रोकने के लिए सभी प्रकाश किरणों को रोक दे । अगर एक इनक्यूबेटर नहीं है, तो पानी के नमूने की बोतल को एल्यूमीनियम फॉयल या ब्लैक इलेक्ट्रिकल टेप में लपेटें और कमरे के 20°C तापमान पर एक अंधेरी जगह में स्टोर करें ।

BOD_5 की गणना निम्नलिखित समीकरण से की जाती है:

BOD_5 (mg /l) = D * [नमूना ($DO_{t=0}$ - $DO_{t=5}$) - खाली ($DO_{t=0}$ - $DO_{t=5}$)]

जहां D* = **डिल्यूशन** फ़ैक्टर

कई औद्योगिक अपशिष्ट जल में जहरीले पदार्थ होते हैं जो सूक्ष्मजीवों के विकास को प्रभावित करते हैं और इस तरह बिना अतिरिक्त इनोकुलम को मिलाये, बीओडी परीक्षण को अविश्वसनीय बना देते हैं । इसी प्रकार, अपशिष्ट जल में शैवाल की उपस्थिति बीओडी परीक्षण को प्रभावित करती है, जब परीक्षण अंधेरे में भी किया जाता है तब भी बीओडी का मान ज्यादा आता है । इस परिसीमा के कारण, आज-कल बीओडी को अनुसंधान और अपशिष्ट जल उपचार नियंत्रण उद्देश्यों के लिए रासायनिक ऑक्सीजन डिमांड (सीओडी) परीक्षण द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है।

अगर पानी का बीओडी स्तर 3 -5 पीपीएम है तो, उसे साफ माना जाता है। 6-9 पीपीएम के बीओडी स्तर वाले पानी को, कुछ हद तक प्रदूषित माना जाता है क्योंकि आमतौर पर इसमें कार्बनिक पदार्थ मौजूद होते हैं और बैक्टीरिया उन्हें विघटित कर रहे होते हैं।

बीओडी सिर्फ कार्बनिक पदार्थों के विनाशकारी घटक का पता लगाता है, इसलिए इसका मान सीओडी के मान से हमेशा कम होता है, जिसमें अकार्बनिक घटक तथा वो सामग्रियां भी शामिल होती हैं जो जैविक रूप से ऑक्सीकृत नहीं हो सकती हैं।

3. रासायनिक ऑक्सीजन की मांग (सीओडी)

अपशिष्ट जल उपचार में, रासायनिक ऑक्सीजन डिमांड (सीओडी) पानी में प्रदूषकों (कार्बनिक पदार्थों) को तोड़ने के लिए आवश्यक ऑक्सीजन की मात्रा के लिए एक महत्वपूर्ण माप है। रासायनिक ऑक्सीजन डिमांड (सीओडी), कार्बनिक पदार्थ की मात्रा का अप्रत्यक्ष माप है। इस परीक्षण विधि से, हमलोग लगभग सभी कार्बनिक घटको की मात्रा को माप सकते हैं, जो पाचन अभिकर्मक द्वारा पच सकते हैं।

सीओडी जैव रासायनिक ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) से विषम है, जो एक निर्धारित ऊष्मायन अवधि (आमतौर पर पांच दिन) के दौरान एरोबिक श्वसन द्वारा नमूने में कार्बनिक पदार्थ को विघटित करने के लिए सूक्ष्मजीवों के उपयोग पर निर्भर करता है। बीओडी और सीओडी वस्तुतः सभी नमूनों में एक दूसरे के साथ सहसंबंधित होते हैं, लेकिन बीओडी हमेशा सीओडी से कम होता है क्योंकि ऑर्गेनिक्स के जैव रासायनिक टूटने अक्सर रासायनिक विधि के रूप में पूरा नहीं होता है।

हिन्दी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है। - ग्रियर्सन

सीओडी और बीओडी के बीच अंतर

सीओडी कार्बनिक और अकार्बनिक दोनों घटकों के ऑक्सीकरण के लिए भंग ऑक्सीजन की आवश्यकता को संदर्भित करता है। बीओडी केवल कार्बनिक घटकों को विघटित या ऑक्सीकृत करने के लिए जलीय सूक्ष्मजीवों द्वारा खपत ऑक्सीजन का एक माप है।

अपशिष्ट जल में आर्गेनिक कार्बन के बीच संबंध

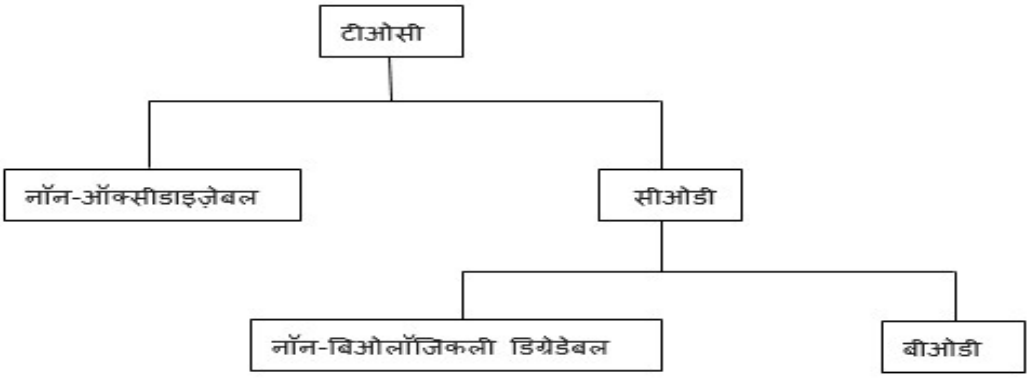

सीओडी का विश्लेषण

अपशिष्ट-जल का एक नमूना पोटेशियमडाइक्रोमेट और सल्फ्यूरिक एसिड कीअधिकता के साथ मिलाया जाता है और मिश्रण को प्रतिवाह स्थिति में, 2 घंटे की अवधि के लिए गर्म किया जाता है । पाचन के दौरान, रासायनिक रूप से ऑक्सीकरण योग्य कार्बनिक पदार्थ, डाइक्रोमेट की एक स्तोईचिओमेट्रिकली समतुल्य मात्रा को कम कर देताहै, और शेष डाइक्रोमेट को मानक फेरस अमोनियम सल्फेट विलयन के साथ टाइट्रेट किया जाता है । पोटेशियम डाइक्रोमेट की मात्रा में गिरावट, ऑक्सीकरण योग्य कार्बनिक पदार्थों की मात्रा का मापक होता है।

"जब दिमाग कमजोर होता है तो परिस्थितियां समस्या बन जाती हैं; जब दिमाग स्थिर होता है तो परिस्थितियां आसान बन जाती हैं; जब दिमाग कमजोर होता है तो परिस्थितियां अवसर बन जाती हैं"

सीओडी के निर्धारण के लिए टाइट्रेशन विधि में, अतिरिक्त डाइक्रोमेट अपचायक कारक फेरस अमोनियम सल्फेट के साथ प्रतिक्रिया करता है ।जैसे ही फेरस अमोनियम सल्फेट (एफएएस) को धीरे-धीरे मिलाया जाता है, अतिरिक्त डाइक्रोमेट अपने ट्राई वैलेंट रूप में बदल जाता है । जैसे ही सभी अतिरिक्त डाइक्रोमेट प्रतिक्रिया करते हैं, यह एक समतुल्य अंत बिंदु तक पहुंच जाता है।रंगसंकेतक भी इस समापन बिंदु को संकेतित कर सकते हैं। इस बिंदु तक पहुंचने का मतलब है कि हमारे द्वारा जोड़ा गया फेरस अमोनियम सल्फेट की मात्रा अतिरिक्त डाइक्रोमेट की मात्रा के बराबर थी। बाद में, हम गणना कर सकते हैं कि कितना डाईक्रोमेट कार्बनिक पदार्थों को ऑक्सीकरण करने में उपयोग हुआ, इस आधार पर कि हमने शुरू में कितना जोड़ा था और कितना बचा हुआ है ।

सीओडी का उष्मापन विधि

हम सैंपल के अवशोषण में परिवर्तन को देखते हुए डाइक्रोमेट की खपत को जान देख सकते हैं। सैंपल Cr^{3+} और Cr^{6+} की वजह से कुछ खास रंग के तरंगदैर्ध्य को ही अवशोषित करते हैं।

हम पाचन के बाद एक फोटोमीटर या स्पेक्ट्रोफोटोमीटर में 600 nm के तरंगदैर्ध्य पर सैंपल के अवशोषण को माप कर, Cr^{3+} की मात्रा को निर्धारित कर सकते हैं। वैकल्पिक रूप से, 420 nm पर Cr^{6+} का अवशोषण को मापकर, पाचन के अंत में अतिरिक्त क्रोमियम की मात्रा निर्धारित कर सीओडी का पता लगाया जा सकता है।

सीओडी परीक्षण जैविक पदार्थों के बीच बायोडिग्रेडेबल और नॉन-बायोडिग्रेडेबल में अंतर का पता नहीं लगाता, इसीलिए ये सैंपल में कुल ऑक्सीकरण योग्य कार्बनिक सामग्री का माप है। इसलिए सीओडी का मान बीओडी के मान से हमेशा ज्यादा होता है । सीओडी परीक्षण कुछ खास औद्योगिक अपशिष्ट जल में ऑक्सीजन आवश्यकताओं के आकलन के लिए, बीओडी परीक्षण की तुलना में बहुत अधिक उपयोगी है। यह उन अपशिष्ट पदार्थों के लिए जायदा महत्वपूर्ण है, जहां विषाक्त पदार्थों की उपस्थिति की वजह से, ऑक्सीकरण की दर कम हो जाती हो, और बीओडी परीक्षण लागू नहीं होता हो ।

अपशिष्ट जो कि कार्बनिक पदार्थों में अधिक है, पानी प्राप्त करने से पहले कार्बनिक कचरे की मात्रा को कम करने के लिए उपचार की आवश्यकता होती है। यदि जल उपचार सुविधाएं प्राकृतिक जल तक पहुंचने से पहले अपशिष्ट जल की जैविक सामग्री को कम नहीं करती हैं, तो प्राप्त जल में रोगाणुओं कार्बनिक पदार्थों का उपभोग करेंगे। फलस्वरूप, ये सूक्ष्म जीवाणु जैविक कचरे के तोड़ने के साथ पानी में ऑक्सीजन का उपभोग करेंगे। पोषक तत्वों से समृद्ध परिस्थितियों के साथ इस ऑक्सीजन की कमी को यूट्रोफिकेशन कहा जाता है, प्राकृतिक पानी की यह स्थिति, जलीय जानवरों की मृत्यु का कारण बन सकती है।

बीओडी से सीओडी के अनुपात का उपयोग कर, कचरे की बायोट्रैटीबिलिटी (जैव-उपचार) के सीमा का पता लगाया जा सकता है । 0.8 या अधिक का अनुपात होना, अपशिष्टों को जैविक उपचार के लायक, और जबकि निम्न अनुपात अपशिष्ट का जैविक उपचार के लिए अनुप्युक्त बताता है। उद्योगों से उत्पन्न अपशिष्टों में बीओडी और सीओडी की अनुमेय सीमा क्रमशः 30 mg/l और 250 mg/l है ।

डीओ, बीओडी और सीओडी के लिए प्रयुक्त उपकरण

परीक्षण के समय को कम करने, टाइट्रेसन और पाचन की जटिलता से बचने के लिए, ऑनलाइन उपकरणों को डीओ, बीओडी और सीओडी के मानों को पता करने में का उपयोग किया जा सकता है । सैम्पल उपकरणों के चित्र नीचे दिखाए गए हैं ।

Dissolved Oxygen Meter	BOD Analyzer	COD Analyser

रोकथाम इलाज से बेहतर है, इसलिए सतह, भूमि और समुद्री जल को प्रदूषित करने से एहतियाती उपाय करना हमेशा बेहतर होता है। औद्योगिक अपशिष्टों का निर्वहन करने से पहले, प्रयोगशाला विधियों का उपयोग करके या उपर्युक्त उपकरणों का उपयोग करके, डीओ, बीओडी और सीओडी के मानों का परीक्षण करना आवश्यक है और परीक्षण से प्राप्त मानों के आधार पर, पारिस्थितिक तंत्र में पानी के प्रदूषण को रोकने के लिए एक उपयुक्त उपचार तंत्र अपनाया जा सकता है।

हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि, औद्योगिक एफ्लुएंट को जल निकायों में प्रवाहित करने से पहले, बीओडी (30mg/l) और सीओडी (250mg/l) का मान, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईइएफ और सीसी) द्वारा निर्धारित अनुमेय सीमा के भीतर हो ।

डॉ. एस. विजयलक्ष्मी
सीनियर तकनीकी अधिकारी, आईसीटी डिवीजन
सीएसआईआर-स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग रिसर्च सेंटर

~ फूलों की घाटी की सैर ~

हमारा देश प्रकृति की शानदार रचनाओं और अस्पष्टीकृत रहस्यों का निवास है। भारत भूमि अद्भुत प्राकृतिक आश्चर्यों और विज्ञानों के साथ दुनिया के कुछ सबसे अच्छे परिदृश्य प्रदान करती है। एक बड़े स्थलाकृतिक विविधता और प्राकृतिक अजूबों का देश, भारत असली अनुभवों के लिए सबसे लोकप्रिय गंतव्य है।

ऐसी ही प्राकृतिक सुंदरता से भरा एक जगह फूलों की घाटी है । मेरे लेखन के माध्यम से मैं आपको इस खूबसूरत जगह की सैर पर ले जाऊंगी । फूलों की घाटी के अलावा मैं आपको दो और रोचक स्थानों की एक यात्रा पर ले जाऊंगी - तुंगनाथ और देवरिया ताल, जो उत्तराखण्ड में हैं ।

फूलों की घाटी आगंतुकों के लिए स्वर्ग का निवास है। अपने विदेशी फूलों और लुप्तप्राय जीवों के लिए प्रसिद्ध, फूलों की घाटी समृद्ध और विविध रूप से सुंदर है। फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान एक फूलों की घाटी का नाम है, जिसे अंग्रेजी में Valley of Flowers कहते हैं। यह भारतवर्ष के उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल क्षेत्र में है। यह विश्व संगठन, यूनेस्को द्वारा सन् 1982 में घोषित विश्व धरोहर स्थल नन्दा देवी अभयारण्य, नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान का एक भाग है । यह उद्यान 87.50 किमी^{2} क्षेत्र में फैला हुआ है।

माना जाता है कि रामायण काल में हनुमान संजीवनी बूटी की खोज में इसी घाटी में पधारे थे। इस घाटी का पता सबसे पहले ब्रिटिश पर्वतारोही फ्रैंक एस. स्मिथ और उनके साथी आर. एल. होल्डसवर्थ ने लगाया था। इसकी बेइंतहा खूबसूरती से प्रभावित होकर स्मिथ 1937 में इस घाटी में वापस आये और, 1938 में "वैली ऑफ फ्लॉवर्स" नाम से एक किताब प्रकाशित करवायी। हिमाच्छादित पर्वतों से घिरा हुआ और फूलों की पांच सौ से अधिक प्रजातियों से सजा हुआ यह क्षेत्र बागवानी विशेषज्ञों या फूल प्रेमियों के लिए एक विश्व प्रसिद्ध स्थल बन गया।

फूलों की घाटी भ्रमण के लिये जुलाई, अगस्त व सितंबर के महीनों को सर्वोत्तम माना जाता है। सितंबर में ब्रह्मकमल खिलते हैं। फूलों की घाटी तक पहुँचने के लिए चमोली जिले का अन्तिम बस अड्डा गोविन्दघाट 275 किमी दूर है। जोशीमठ से गोविन्दघाट की दूरी 19 किमी है। यहाँ से प्रवेश स्थल की दूरी लगभग 13 किमी है जहाँ से पर्यटक 3 किमी लम्बी व आधा किमी चौड़ी फूलों की घाटी में घूम सकते हैं।

"लोग आपके आइडिया को ग़लत बताते हैं तो आपकी ज़िम्मेदारी है कि इसे सही साबित करके दिखाए! "

नवम्बर से मई माह के मध्य घाटी सामान्यतः हिमाच्छादित रहती है। जुलाई एवं अगस्त माह के दौरान एल्पाइन जड़ी की छाल की पंखुडियों में रंग छिपे रहते हैं। यहाँ सामान्यतः पाये जाने वाले फूलों के पौधों में एनीमोन, जर्मेनियम, मार्श, गेंदा, प्रिभुला, पोटेन्टिला, जिउम, तारक, लिलियम, हिमालयी नीला पोस्त, बछनाग, डेलफिनियम, रानुनकुलस, कोरिडालिस, इन्डुला, सौसुरिया, कम्पानुला, पेडिक्युलरिस, मोरिना, इम्पेटिनस, बिस्टोरटा, लिगुलारिया, अनाफलिस, सैक्सिफागा, लोबिलिया, थर्मोपसिस, ट्रौलियस, एक्युलेगिया, कोडोनोपसिस, डैक्टाइलोरहिज्म, साइप्रिपेडियम, स्ट्राबेरी एवं रोडोडियोड्रान इत्यादि प्रमुख हैं

चोपता की ओर बढते हुए रास्ते में बांस और बुरांश का घना जंगल और मनोहारी दृश्य पर्यटकों को लुभाते हैं। चोपता समुद्रतल से बारह हज़ार फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां से तीन किमी की पैदल यात्रा के बाद तेरह हज़ार फुट की ऊंचाई पर तुंगनाथ मंदिर है, जो पंचकेदारों में एक केदार है। चोपता से तुंगनाथ तक तीन किलोमीटर का पैदल मार्ग बुग्यालों की सुंदर दुनिया से साक्षात्कार कराता है। तुंगनाथ उत्तराखण्ड के गढ़वाल के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित एक पर्वत है। तुंगनाथ पर्वत पर स्थित है तुंगनाथ मंदिर, जो 3460 मीटर की ऊँचाई पर बना हुआ है और पंच केदारों में सबसे ऊँचाई पर स्थित है। यह मंदिर 1,000 वर्ष पुराना माना जाता है और यहाँ भगवान शिव की पंच केदारों में से एक के रूप में पूजा होती है। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण पाण्डवों द्वारा भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए किया गया था, जो कुरुक्षेत्र में हुए नरसंहार के कारण पाण्डवों से रुष्ट थे। तुंगनाथ की चोटी तीन धाराओं का स्रोत है, जिनसे अक्षकामिनी नदी बनती है। मंदिर चोपता से 3 किलोमीटर दूर स्थित है।

बारह से चौदह हजार फुट की ऊंचाई पर बसा ये क्षेत्र गढ़वाल हिमालय के सबसे सुंदर स्थानों में से एक है। जनवरी-फरवरी के महीनों में आमतौर पर बर्फ की चादर ओढ़े इस स्थान की सुंदरता जुलाई-अगस्त के महीनों में देखते ही बनती है। इन महीनों में यहां मीलों तक फैले मखमली घास के मैदान और उनमें खिले फूलों की सुंदरता देखने योग्य होती है। इसीलिए अनुभवी पर्यटक इसकी तुलना स्विट्जरलैंड से करने में भी नहीं हिचकते। सबसे विशेष बात ये है कि पूरे गढ़वाल क्षेत्र में ये अकेला क्षेत्र है जहां बस द्वारा बुग्यालों की दुनिया में सीधे प्रवेश किया जा सकता है। यानि यह असाधारण क्षेत्र श्रद्धालुओं और पर्यटकों की साधारण पहुंच में है।

रूद्रप्रयाग से 49 किमी की दूरी पर स्थित देवरिया ताल एक सुंदर पर्यटन स्थल है। हरे भरे जंगलों से घिरी हुई यह एक अद्भुत झील है। इस झील के जल में गंगोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री और नीलकंठ की चोटियों के साथ चौखम्बा की श्रेणियों की स्पष्ट छवि प्रतिबिंबित होती है। समुद्र तल से 2438 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह झील चोपटा – उखीमठ रोड से 2 किमी की दूरी पर स्थित है। इस सरोवर का कुल व्यास पांच सौ मीटर है। इसके चारों ओर बांस व बुरांश के सघन वन हैं तो दूसरी ओर एक खुला सा मैदान है। यह झील यहाँ आने वाले यात्रियों को नौका विहार, कांटेबाजी और विभिन्न पक्षियों को देखने के अवसर प्रदान करती है। यहाँ रात भर के शिविर और ट्रेकिंग दर्शकों की लोकप्रिय गतिविधियाँ है। ट्रेकर्स आमतौर पर चोपटा से चढ़ाई शुरू करते हैं, जो अपहिल ट्रैक से देवरिया ताल को और पास वाले ट्रैक से तुंगनाथ और चंद्रशिला को जोड़ता है। किंवदंतियों के अनुसार देवता इस झील में स्नान करते थे अतः पुराणों में इसे 'इंद्र सरोवर' के नाम से

उल्लेखित किया गया है। ऋषि-मुनियों का मानना है 'यक्ष' जिसने पांडवों से उनके वनवासकाल के दौरान सवाल किए थे और जो पृथ्वी में छुपे हुए प्राकृतिक खजानों और वृक्षों की जड़ों का रखवाला है, इसी झील में रहता था।

हमारा देश इस तरह के खूबसूरत स्थानों से युक्त है । हमारे देश में प्रकृति और वनों की रक्षा और संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी है।

गूगल असिस्टेंट पर दुनियाभर में दूसरी सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाली भाषा बनी हिंदी

गूगल ने बताया है कि हिंदी उसके गूगल असिस्टेंट पर दुनियाभर में दूसरी सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाली भाषा बन गई है। बकौल कंपनी, अब यूज़र्स 'ओके गूगल, हिंदी बोलो या टॉक टू मी इन हिंदी' बोलकर गूगल असिस्टेंट से हिंदी में बातचीत कर सकेंगे। गूगल ने असिस्टेंट में बांग्ला, मराठी, तेलुगू, तमिल और उर्दू का सपोर्ट भी जोड़ा है।

"अगर जिंदगी में सुकून चाहते हो तो लोगो की बातों को दिल से लगाना छोड दो।"

डॉ. एस. विजयलक्ष्मी
सीनियर तकनीकी अधिकारी, आईसीटी डिवीजन
सीएसआईआर-स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग रिसर्च सेंटर

~ सीएसआईआर-एसईआरसी में हाइपर कन्वर्ज इंफ्रास्ट्रक्चर (HCI) ~

इस डिजिटल युग में, हर संस्थान तकनीकी प्रगति के साथ रहने के लिए अपने आईटी बुनियादी ढांचे पर काफी हद तक निर्भर है। आईटी संसाधनों को बनाए रखने और इसे प्रबंधित करने में बहुत पैसा खर्च किया जाता है। आईटी उद्योग तेजी से हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर के मामले में काफी बदलाव के दौर से गुजर रहा है। जिस तरीके से जानकारी को कुशलता से नियंत्रित किया जाता है और प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है वह निर्णायक कारक बन जाता है। तकनीकी प्रगति का लाभ लेने और बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर को समय-समय पर कुरकुरा बनाना पड़ता है।

CSIR-SERC हमेशा नई तकनीकों को अपनाने में एक अग्रणी रहा है। इस संदर्भ में, आईटी अवसंरचना को एक हाइपर कन्वर्ज्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर में अपग्रेड किया गया है।

हाइपर-कंवर्जेड इन्फ्रास्ट्रक्चर) HCI) एक सॉफ्टवेयर-डिफाइन आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर है, जो पारंपरिक" हार्डवेयर-डिफाइंड "सिस्टम के सभी तत्वों का वर्चुअलाइजेशन करता है। एचसीआई में एक वर्चुअलाइज्ड कंप्यूटिंग) एक हाइपरवाइजर(, एक वर्चुअलाइज्ड सैन) सॉफ्टवेयर-डिफाइन्ड स्टोरेज (और वर्चुअलाइज्ड नेटवर्किंग) सॉफ्टवेयर-डिफाइंड नेटवर्किंग (शामिल है। HCI आमतौर पर कमर्शियल ऑफ-द-शेल्फ) COTS) सर्वर पर चलता है। अभिसरित बुनियादी ढाँचे) CI) और हाइपर-अभिसरित अवसंरचना के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि HCI में, भंडारण क्षेत्र नेटवर्क और अंतर्निहित भंडारण सार दोनों को भौतिक रूप से हार्डवेयर में) या हाइपरविजर के माध्यम से (हार्डवेयर के बजाय वस्तुतः लागू किया जाता है। क्योंकि सभी सॉफ्टवेयर-परिभाषित तत्व हाइपरविजर के संदर्भ में कार्यान्वित किए जाते हैं, सभी संसाधनों के प्रबंधन को हाइपर-कंवर्जेड इन्फ्रास्ट्रक्चर के सभी उदाहरणों में फीड किया जा सकता है।

हाइपर-कंवर्जेड इंफ्रास्ट्रक्चर का संभावित असर यह है कि कंपनियों को अब अलग-अलग कंप्यूटरी और स्टोरेज सिस्टम पर भरोसा करने की जरूरत नहीं होगी। यह प्रबंधन को भी सरल बनाता है और इष्टतम संसाधन उपयोग सुनिश्चित करता है।

CSIR-SERC में, Nutanix का HCI लागू किया गया है। 2U फॉर्म फैक्टर के साथ पूरा इंफ्रास्ट्रक्चर 4 नोड क्लस्टर में है। पूरे इंफ्रास्ट्रक्चर को एक्रोपोलिस के हाइपरवाइज़र द्वारा नियंत्रित किया जाता है और एक सीन्ट्रलाइज्ड PRISM नियंत्रण द्वारा प्रबंधित किया जाता है। सभी भौतिक सिस्टम को वर्चुअल सिस्टम में माइग्रेट किया गया है । इस प्रकार सर्वर और भंडारण के आवर्ती रखरखाव की लागत को कम किया जा सकता है ।

Nutanix वर्चुवलाइजेशन और क्लाउड वातावरण के लिए बनाए गए एक हाइपरकॉन्वर्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर सॉल्यूशन के उद्देश्य से बचाता है। यह समाधान नूतनिक्स एंटरप्राइज क्लाउड प्लेटफॉर्म के माध्यम से उद्यम के लिए वेब-स्केल आर्किटेक्चर के प्रदर्शन और आर्थिक लाभों को लाता है, जो कि दो उत्पाद परिवारों- नूतनिक्स एक्रोपोलिस और नूटनिक्स प्रिज्म से बना है।

इस समाधान के गुणों में शामिल हैं:

- भंडारण और कम्प्यूटरीकृत संसाधन x86 सर्वर पर हाइपरकंवर किए गए।
- सॉफ्टवेयर में स्थित सिस्टम इंटेलिजेंस।
- डेटा, मेटाडेटा, और संचालन पूरी तरह से x86 सर्वर के पूरे क्लस्टर में वितरित किए गए हैं।
- घटक विफलता को सहन करने और समायोजित करने के लिए स्व-चिकित्सा।
- एपीआई आधारित स्वचालन और समृद्ध विश्लेषिकी।

हिंदी का विस्तार हमारा शब्दकोष भी समृद्ध हुआ, 20 साल में शब्दों की संख्या 20 हजार से बढ़कर 1.5 लाख हुई

देश की शीर्ष 10 भाषाओं में से सिर्फ हिंदी बोलने वाले बढ़े, बाकी घटे; इंटरनेट पर भी सबसे तेज 94% की गति से हिंदी बढ़ रही

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

हिंदी और समृद्ध हो रही है। इंटरनेट पर भी हिंदी का विस्तार हो रहा है। देश की शीर्ष 10 भाषाओं में सिर्फ हिंदी बोलने वालों की संख्या बढ़ी है। बीते चार दशक में हिंदी बोलने वाले 19% बढ़े हैं। बीते 10 साल में हिंदी भाषी 10 करोड़ बढ़ गए। जबकि इसी दौरान अन्य 9 भाषाएं बोलने वालों की संख्या घटी है। मलयालम बोलने वालों की संख्या सबसे ज्यादा 28% घटी है। यही नहीं, हिंदी निदेशालय के सरकारी हिंदी शब्दकोष में 20 साल में शब्दों की संख्या साढ़े सात गुना बढ़ी है। इसमें अब शब्द 20 हजार से बढ़कर 1.5 लाख हो गए हैं। जबकि 30 साल में अंग्रेजी के ऑक्सफोर्ड शब्दकोष में 9500 शब्द ही जुड़े हैं।

5 साल में दक्षिण में हिंदी सीखने वाले 22% बढ़े

क्रम	भाषा	बोलने वाले	आबादी में %	4 दशक में वृद्धि%
1	हिंदी	52.83	43.63	17.95
2	बंगाली	9.72	8.03	-1.71
3	मराठी	8.30	6.86	-9.97
4	तेलुगु	8.11	6.70	-17.89
5	तमिल	6.90	5.70	-17.15
10	मलयालम	3.48	2.88	-28.00

संख्या (करोड़ में)

▪ गुजराती, उर्दू, कन्नड़ व उड़िया क्रमशः छठे, सातवें, आठवें और नौवें स्थान पर हैं।

5 साल में दक्षिण में हिंदी सीखने वाले 22% बढ़े: दक्षिण भारत में हिंदी परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा द्वारा आयोजित हिंदी परीक्षा में बैठने वाले लोगों की संख्या पांच साल में 22% बढ़ी है। 2019 में हुई इस परीक्षा में करीब छह लाख लोग बैठे।

इंटरनेट पर हिंदी

2021 में इंटरनेट पर हिंदी इस्तेमाल करने वाले अंग्रेजी से ज्यादा होंगे

▪ इंटरनेट में हिंदी सबसे तेज 94% की दर से बढ़ रही है। अंग्रेजी की रफ्तार 19% है। हर पांच में एक व्यक्ति हिंदी में सामग्री ढूंढ रहा है। हिंदी में सामग्री ढूंढने वाले लोग भी दोगुना तेजी से बढ़ रहे हैं।

▪ 2021 तक वेब पर 54 करोड़ लोग हिंदी, मराठी, बंगाली आदि में सर्च करने वाले होंगे। सर्वाधिक 35 करोड़ हिंदी वाले होंगे। जबकि अंग्रेजी के 21 करोड़ लोग होंगे।

▪ 68% लोग मानते हैं कि उन्हें इंटरनेट पर उनकी भाषा में मिलने वाली सामग्री ज्यादा भरोसेमंद होती है।

...और विश्व में हिंदी

दुनिया में चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा, 170 देश में पढ़ाई

▪ 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिंदी पढ़ाई जा रही है। भारत के बाहर करीब 600 हिंदी के स्कूल-कॉलेज हैं। मेंडरिन, स्पैनिश और अंग्रेजी के बाद दुनिया में हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाती है।

▪ नासा के भाषा विभाग प्रमुख डॉ. ब्रिक्स के मुताबिक, हिंदी दुनिया की एकमात्र ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) भाषा है। भविष्य में यही कंप्यूटर की भाषा होगी।

▪ इसी साल संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने हिंदी में समाचार सेवा भी शुरू की है। ये सम्मान पाने वाली हिंदी पहली गैर-यूएन ऑफिशियल भाषा बन गई है।

"दूसरों की मदद करते हुए यदि दिल में खुशी हो, तो वही सेवा है बाकी सब दिखावा है।"

प्रिज्म

प्रिज्म प्रबंधन मंच है जो एक एकीकृत प्रबंधन इंटरफ़ेस प्रदान करता है जो अनुकूलन के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि उत्पन्न करता है - वर्चुवलाइजेशन, इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट और रोजमर्रा के ऑपरेशन।

एक्रोपोलिस

एक्रोपोलिस उस प्लेटफॉर्म की नींव है जो हाइपर-कंवर्जेड इन्फ्रास्ट्रक्चर से शुरू होता है, फिर बिल्ट-इन वर्चुवलाइजेशन, स्टोरेज सर्विसेज, वर्चुवल नेटवर्किंग और क्रॉस-हाइपरवाइजर एप्लिकेशन मोबिलिटी जोड़ता है - एक टर्नकी समाधान बनाना जो 60 मिनट या उससे कम समय में आउट-ऑफ-द-बॉक्स तैनात किया जा सकता है।

नटनीक्स एएचवी

Nutanix AHV एक व्यापक उद्यम वर्चुवलाइजेशन समाधान है जिसे कसकर एक्रोपोलिस में एकीकृत किया गया है और इसे बिना किसी अतिरिक्त के प्रदान किया गया है और इस में कोई अतिरिक्त लाइसेंस लागत नहीं

SERC Nutanix क्लस्टर में एक ब्लॉक में 4 नोड हैं जो 2U सर्वर है जिसमें 4 छोटे सर्वर हैं, जो हार्डवेयर प्रिंट को कम करते हैं। प्रत्येक नोड क्लस्टर में कुल 8 सीपीयू के साथ 2 प्रोसेसर शामिल है। इसमें अधिकतम 1.5TB मेमोरी और 50TB स्टोरेज स्पेस है। यहां भंडारण HDD और SSD दोनों को स्वीकार करने वाली एक हाइब्रिड अवधारणा है। भंडारण RAIN (इंडिपेंडेंट नोड्स का विश्वसनीय ऐरे) तकनीक पर आधारित है, डेटा को डेटा विश्वसनीयता के लिए नोड्स में संग्रहीत किया जाता है। सभी प्रबंधन कार्य एक इनबिल्ट वेब आधारित प्रिज्म प्रबंधन उपकरण के माध्यम से किया जाता है। भंडारण, गणना और नेटवर्क का प्रबंधन एकल प्रबंधन इंटरफ़ेस के माध्यम से किया जाता है, जिससे प्रबंधन ओवरहेड्स और जटिल कार्यों या प्रक्रियाओं को कम किया जा सकता है।

उपरोक्त प्रणाली के कुछ लाभ निम्नलिखितनुसार हैं:

टर्नकी समाधान

आउट-ऑफ-द-बॉक्स गणना और भंडारण उद्योग मानक हाइपरविजर क्षमताओं के समर्थन - 30 मिनट के तहत तैनाती का समय

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी। - मैथिलीशरण गुप्त

वर्चुवलाइजेशन सादगी

भंडारण का एकमुश्त विन्यास सभी वीएम को क्लस्टर-बैक-स्टोरेज सिस्टम के समय-उपभोग प्रबंधन को समाप्त करने में स्वत: समर्थन प्रदान करता है

आसान प्रबंधन

सभी संगणना भंडारण संसाधनों पर आसान और सुव्यवस्थित प्रबंधन

घटा हुआ पदचिह्न

मूल रूप से एक2 U उपकरण में वितरित सर्वर स्थान, शक्ति और शीतलन आवश्यकताओं को कम करता है।

आपदा वसूली

Nutanix वर्चुवल कंप्यूटिंग प्लेटफॉर्म किसी भी होस्ट किए गए VM के लिए मूल बैक-अप और प्रतिकृति क्षमताओं को वितरित करता है। Nutanix VM और फ़ाइल-स्तर DR प्रदान करता है जिसे आसानी से अंतर्निहित रन-बुक स्वचालन के माध्यम से प्रबंधित किया जाता है। सारे डेटा को हस्तांतरण से पहले डी-डुप्लिकेट किया गया है, और फिर अधिकतम दक्षता और अंतरिक्ष बचत के लिए बाइट-स्तरीय ग्रैन्युलैरिटी के साथ प्रेषित किया गया है

उपरोक्त HCI समाधान निर्बाध सेवाएं प्रदान करने में सुविधा प्रदान करेगा और जल्द ही CSIR-SERC के लिए निवेश पर रिटर्न सुनिश्चित करेगा

घर की मुर्गी दाल बराबर

Translation: Something owned (POSSESSED) in abundance is undervalued. Literally it means chicken at home (expensive food) feels like daal (lentil dish, staple food in India)

जवाब (पृ. 18 से) : 1. हरी मिर्च, 2. परछांई, 3. साईकिल, 4. अख़बार, 5. मटका, 6. चुंबक, 7. ऐनक, 8. पानी, 9. मोमबत्ती, 10. झाड़ू, 11. छतरी, 12. दीपक

डॉ टी वी विजय कुमार ,प्रभारी वैज्ञानिक
सीएसआईआर - एनएमएल मद्रास केंद्र

~ वर्तमान में सीएसआईआर एनएमएल-मद्रास सेंटर, चेन्नै की अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ ~

विभिन्न खनिजों के फ्लोटेशन / कॉलम फ्लोटेशन से संबंधित अनुसंधान और विकास गतिविधि पिछले तीन दशकों से सीएसआईआर-एनएमएल मद्रास केंद्र का मुख्य आधार रही है, क्योंकि इस प्रक्रिया में प्रसंस्करण या पृथक्करण से गुजरने वाले पचास प्रतिशत से अधिक खनिज वस्तुओं का योगदान होता है। स्तंभ प्लवनशीलता प्रौद्योगिकी के विकास ने प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर-9 प्राप्त किया, जिसका अर्थ है कि यह वाणिज्यिक पैमाने पर सफल तैनाती के लिए तैयार है। अब तक, 5 प्रयोगशाला पैमाने, 1 पायलट पैमाने और 6 वाणिज्यिक पैमाने पर प्लवनशीलता कॉलम कमीशन किए गए थे। हाल ही में, मेसर्स टाटा स्टील लिमिटेड के आरएंडडी डिवीजन को एक प्रयोगशाला पैमाने के प्लवनशीलता स्तंभ की आपूर्ति की गई थी। वर्तमान में, दो वाणिज्यिक पैमाने पर प्लवनशीलता कॉलम स्थापना के अधीन हैं, एक मेसर्स टाटा स्टील लिमिटेड (200 टीपीडी) के बेलाटिंडा कोल प्रिपरेशन प्लांट में और दूसरा मेसर्स केरला मिनरल एंड मेटल्स लिमिटेड (KMML), चवारा, केरल के लिए मिनरल सेपरेशन प्लांट (MSP) सिलिमनाइट फ्लोटेशन (100 टीपीडी) है।

भारत को समृद्ध जैव-विविधता से सम्मानित किया गया है। NML मद्रास सेंटर 4M थीम - फास्ट ट्रैक ट्रांसलेशनल प्रोजेक्ट के तहत पर्यावरण के अनुकूल और जैव-अपघट्य प्लवनशीलता अभिकर्मकों के विकास में लगा हुआ है। सिलिमनाइट फ्लोटेशन के लिए एक नया कलेक्टर विकसित किया गया था क्योंकि वर्तमान में व्यावसायिक रूप से ब्रांडेड कलेक्टर का इस्तेमाल किया गया था, जो वांछित ग्रेड और मेसर्स केएमएमएल की पुनर्प्राप्ति नहीं कर रहा था। नए विकसित किए गए कलेक्टर का उपयोग शीघ्र ही स्थापित किए जाने वाले नए प्लॉटेशन कॉलम में किया जाएगा। इसी तरह की तर्ज पर, सीएसआईआर-सेंट्रल लेदर रिसर्च लेबोरेटरी, चेन्नई के सहयोग से कोल फ्लोटेशन के लिए कलेक्टर विकसित किए जा रहे हैं।

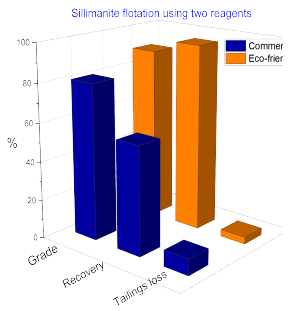

भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा "डिसैलिनेशन के लिए ग्रेफाइट अयस्क से ग्रेफिन आधारित झिल्ली का विकास" नामक एक नई परियोजना प्रदान की गई, जिसे सीएसआईआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी (सीएसआईआर-एनआईआईएसटी), तिरुवन्तपुरम के सहयोग से निष्पादित किया जाएगा। एनएमएल मद्रास केंद्र ग्रेफाइट प्लवनशीलता के लिए नए विकसित हरे अभिकर्मक का उपयोग करके निम्न-ग्रेड ग्रेफाइट अयस्क के प्रसंस्करण के लिए फ्लोशीट विकसित कर रहा है। तदुपरान्त उच्च ग्रेड सांद्रता, सीएसआईआर-एनआईआईएसटी द्वारा ग्राफीन झिल्ली के उत्पादन के लिए उपयोग किया जाएगा। इन ग्राफीन झिल्ली का उपयोग अलवणीकरण उद्देश्य के लिए किया जाना है।

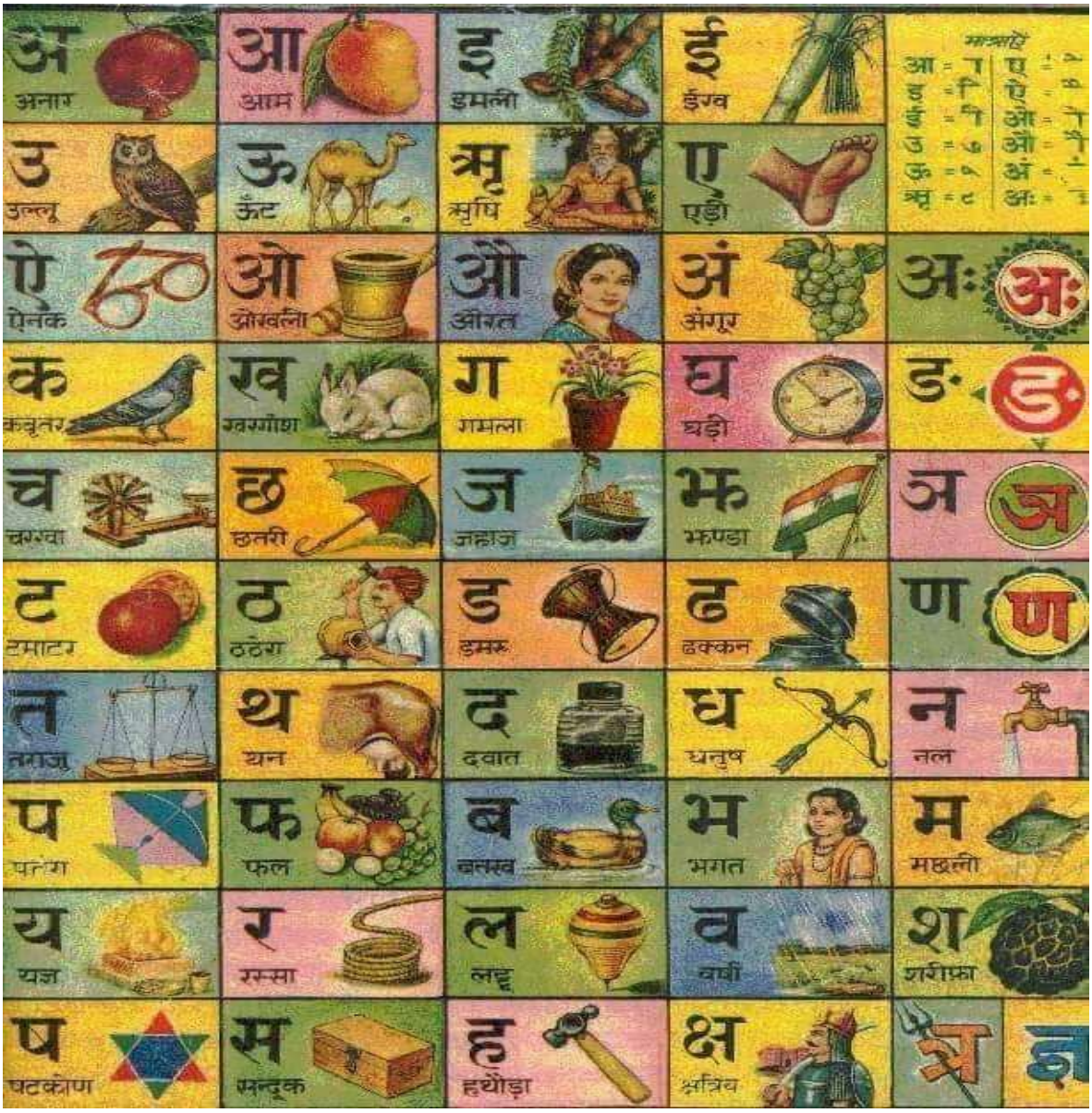

श्रीमती एस. शोभना , प्रशासन नियंत्रक
सीएसआईआर मद्रास काम्प्लेक्स

~ सीएसआईआर में मेरा सफ़र ~

यह मेरी कहानी है। मेरी कहानी का दूसरा भाग अक्तूबर 1982 में मेरे 22 + वर्ष की आयु में सीएसआईआर -क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला त्रिवेंद्रम में मेरी स्थायी प्रविष्टि के साथ शुरू हुआ । मेरी शादी वर्ष 1983 में हुई थी। मैं ने 12 अप्रैल 1992 तक स्थापना अनुभाग, क्रय अनुभाग और विभिन्न वैज्ञानिक प्रभागों में प्रभागाध्यक्षों की निजी सहायक के रूप में काम किया । इस अवधि के दौरान, दोपहर के भोजन के बाद, जब भी मुझे समय मिलता था, हिंदी स्टाफ से हिंदी टाइपिंग और हिंदी आशुलिपि का अध्ययन करने के लिए मैं स्थापना अनुभाग में काम कर रहे हिंदी स्टाफ के पास जाती थी । हिंदी सप्ताह समारोह के दौरान, राजभाषा प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार जीतना मेरा उद्देश्य था, जिसमें मैं सफल हो सकी । उस समय स्थापना अनुभाग में कार्य कर रहे सभी डीलिंग असिस्टेंट बहुत वरिष्ठ और बुजुर्ग लोग थे क्यों कि उन दिनों प्रशासनिक कर्मियों की पदोन्नति लंबे समय के बाद होती थी । वरिष्ठ सहायक समय पर अपना काम पूरा नहीं करते थे । किसी काम को पूरा करने के लिए, कर्मचारियों को कई बार उनसे मिलना पड़ता था । जब 1986 में चौथे वेतन आयोग की घोषणा की, तो वरिष्ठ अधिकारियों ने मुझे बताया कि स्टेनोग्राफर्स के लिए करियर में कोई प्रगति नहीं है। उस समय से मेरे मन में केडर बदलाव की इच्छा हुई । 13अप्रैल 1992 को मुझे सीनियर स्टेनोग्राफर के रूप में पदोन्नति मिली और उस पद पर 5 वर्ष की नियमित सेवा पूरी होने पर, मैं ने अनुभाग अधिकारियों के लिए सीएसआईआर की विभागीय परीक्षा के लिए आवेदन दिया और अनुभाग अधिकारी के पद पर मैं चयनित हो गयी और आरआरएल में ही मेरी तैनाती हुई और 1997-11-13 को मैं ने इस पद पर कार्यग्रहण किया ।

1997 नवंबर से, मेरी स्थिति कर्मचारी से प्रबंधन में बदल गई। मैं ने ध्यान में रखा पहली बात यह थी कि मैं अपने किसी भी स्टाफ को बेवजह परेशान नहीं करूंगी । मेरे बॉस से मुझे जो दर्दनाक व्यवहार मिला, वह कभी भी मेरे स्टाफ को हस्तांतरित नहीं किया जाएगा । इसका मतलब यह नहीं है कि मैं एक काबिल अधिकारी हूँ। मैं ने काम का पूरा अध्ययन किया और जानबूझकर चीजों में देरी कर रहे वरिष्ठ स्टाफ से निपटने में कामयाब हो गयी। मैं परिवार के सदस्य की तरह उनमें से एक होने की कोशिश की और समय-समय पर सामने आयी समस्याओं का हल किया। मैंने अपने उच्च अधिकारियों को स्टाफ सदस्यों के खिलाफ कभी शिकायत नहीं की । भूल जाओ और माफ कर दो , जीवन में यही मेरी नीति है। मैंने उन लोगों पर बहुत एहसान किया है जो व्यक्तिगत या पेशेवर जीवन में मेरे दुश्मन थे । मेरे इस व्यवहार से उन लोगों को मेरे दृष्टिकोण को महसूस करने का अवसर मिला । मैं एक आशावादी हूं। मुझे लगता है कि जो कुछ भी हुआ और होने जा रहा है, वह सब केवल ईश्वर की इच्छा है और सब की भलाई के लिए है।

2012-11-13 को मुझे प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया । इस बार मेरा स्थानांतरण होना निश्चित था । हालांकि उस समय एनआईआईएसटी में एक प्रशासनिक अधिकारी पहले से मौजूद था, लेकिन सौभाग्य से मैं स्थानांतरण से बच गयी और प्रशासनिक कार्य दो प्रशासनिक अधिकारियों के बीच वितरित किया गया ।

मैंने 2006 के दौरान योग अभ्यास शुरू किया और अब भी जारी है । मुझे लगता है कि वह मेरे अस्तित्व की पूरी ताकत है। वर्ष 2014 में मुझे बहुत बुरे समय से गुजरना पड़ा..... ... .. मेरा अस्तित्व भी बहुत मुश्किल था। 2 महीने के भीतर मेरा वजन 7 किलो कम हो गया था... .. विभिन्न परीक्षणों के बाद, डॉक्टरों ने लगभग निदान किया कि मैं लिम्फोमा से पीड़ित हूं। पेट और यकृत से लिम्फोड्स की बायोप्सी करने से पहले, उन्होंने मुझे अपनी धारणा बताई। लेकिन मेरे मन में मैंने कहा था कि ऐसा नहीं है .....। मैंने भगवान से प्रार्थना की, मुझे इस तरह की बीमारियां न दें। बाद में यह साबित हुआ कि मेरा विचार सही था .... लेकिन लंबे समय तक मुझे दवा के तहत रहना पड़ा । यह जून 2014 में हुआ था और मैं 2 महीने से अधिक समय तक बिस्तर पर लेटी थी। इस दौरान मैं ने तालियोल (सभी वैदिक मंत्रों से युक्त एक पुस्तक) से बहुत सारे मंत्रों का उच्चारण किया। इन सभी ने मुझे अपना जीवन वापस दे दिया । 2महीने के बाद मैं ने कार्यालय में कार्य ग्रहण किया । सितंबर 2015 में, श्री एन.एस .राजू, मेरे सह -प्रशासनिक अधिकारी को प्रशासन नियंत्रक के पद पर पदोन्नति मिली और एनआईओ गोवा में स्थानांतरित कर दिया गया। इसलिए मुझे एनआईआईएसटी के प्रशासन के पूर्ण प्रभार में रहना पड़ा । अगले 3 महीने में मुझे संस्थान के प्रशासनिक प्रमुख के रूप में कार्य करना पड़ा और उस दौरान मुझे 19 तकनीकी कर्मचारियों के मूल्यांकन का संचालन करना पड़ा ।

जनवरी 2016 के दौरान एक 11 महीने के लिए एनआईआईएसटी में प्रशासन नियंत्रक को तैनात किया गया और उसके बाद 29 जून 2018 तक मैं सीएसआईआर-एनआईआईएसटी के प्रशासनिक प्रमुख के रूप में कार्य कर रही थी। इस अवधि के दौरान 14 वैज्ञानिकों का चयन पूरा किया गया और अधिकांश वैज्ञानिक ड्यूटी में शामिल हो गए। प्रशासन नियंत्रक के पद पर पदोन्नति पर सीएसआईआर-एनआईआईएसटी छोड़ने से पहले, मैं ने वैज्ञानिकों के 10 और पदों को भरने के लिए कार्रवाई शुरू कर दी थी । 1998 से 29 जून 2018 तक मैं ने वैज्ञानिकों से लेकर छात्रों तक, सभी कर्मियों के सलाहकार के रूप में कार्य किया ।

मुझे यह बताते हुए गर्व है कि मैंने पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ संगठन की सेवा की है ।

कुछ आरम्भ करने के लिए आप का महान होना कोई आवश्यक नही.. लेकिन महान होने के लिए आप का कुछ आरम्भ करना अत्यंत आवश्यक है।"

मद्रास कॉम्प्लेक्स में शामिल होने के बाद, एक महीने के भीतर , मैंने अपनी सेवानिवृत्ति के लिए शेष 23महीने की छोटी अवधि के भीतर पूरा करने के लिए कुछ विशिष्ट जनादेशों को छांटा और उनमें से कुछ को पूरा कर सकी और अब केवल 13 महीने बचे हैं।

मेरी कहानी का तीसरा भाग यहाँ से शुरू होता है।

अपने घर से एक छात्रावास में और एनआईआईएसटी से सीएमसी में प्रतिमान बदलाव ने मुझे यह एहसास दिलाया है कि मुझे सलाखों के पीछे डाल दिया गया है। परिवार की याद मेरे लिए एक बड़ी समस्या है, खासकर जब मेरे सेवा से निवृत्त पति और उम्रदराज सास मेरे मूल निवास स्थान में हैं। हर सप्ताह के अंत में मूल स्थान पर जाना मेरी उम्र की महिला के लिए इतना आसान नहीं है। बहुत सारी दर्दनाक चीजें मेरे जीवन से गुजर रही हैं जैसे कि पारिवारिक कार्यों जैसे विवाह, राष्ट्रीय त्यौहार इत्यादि का त्याग करना ,जो मुझे लगता है कि सभी भगवान की इच्छा है। जब ताकत और पैसा जीवन का फल हैं, परिवार और दोस्त जीवन की जड़ें हैं। हम फलों के बिना जिंदा रह सकते हैं लेकिन बिना जड़ के कभी खड़े नहीं हो सकते। जैसा कि मुझे ऊपर से नीचे तक पूरा समर्थन मिल रहा है, मैं अभी भी यहाँ समापन बिंदु तक पहुँचने की कोशिश कर रही हूँ। मैं अपनी कहानी को यहां समाप्त करना चाहती हूं।

मद्रास कॉम्प्लेक्स में शामिल होने के बाद, एक महीने के भीतर ,मैं ने अपनी सेवानिवृत्ति के लिए शेष 23महीने की छोटी अवधि के भीतर पूरा करने के लिए कुछ विशिष्ट जनादेशों को छांटा और उनमें से कुछ को पूरा कर सकी और अब केवल 13 महीने बचे हैं।

"जीतने का मजा तब ही आता है, जब सभी आपके..हारने का इंतजार कर रहे हो!"

पी. वासुदेवन
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ छात्र और अनुशासन ~

छात्र जीवन में अनुशासन बहुत आवश्यक है अनुशासनयुक्त वातावरण बच्चों के विकास के लिए नितांत आवश्यक है। बच्चों में अनुशासनहीनता उन्हें आलसी व कामचोर और कमजोर बना देती है। वे अनुशासन में न रहने के कारण बहुत उद्दंड हो जाते हैं। इससे उनका विकास धीरे होता है। एक बच्चे के लिए यह उचित नहीं है। अनुशासन में रहकर साधारण से साधारण बच्चा भी परिश्रमी बुद्धिमान और योग्य बन सकता है। समय का मूल्य भी उसे अनुशासन में रखकर वह समय पर अपने हर कार्य को करना सीखता है। जिसने अपने समय की कद्र की वह जीवन में कभी परास्त नहीं होता है।

आज के भागदौड वाले जीवन में माता-पिता के पास बच्चों की देखभाल के लिए उपयुक्त समय नहीं है। बच्चे घर में नौकरों या क्रैच में महिलाओं द्वारा संभाले जा रहे हैं। माता-पिता की छत्र छाया से निकलकर इन बच्चों को अनुशासन में रहने की आदत नहीं होती है। विद्यालयों का वातावरण भी अब अनुशासनयुक्त नहीं है। इसका दुष्प्रभाव यह है कि बच्चों में अनुशासनहीनता बढ़ रही है। वह उद्दंड और शैतान हो रहे हैं। परिवार के छोटे होने के कारण भी बच्चों की देखभाल भलीभांति नहीं हो पा रही है। माता-पिता उनकी हर मांग को पूरा कर रहे हैं। इससे छात्रों में स्वच्छंदता का विकास होने लगा है और वे अनुशासन से दूर होने लगे हैं। अनेक आपराधिक व असभ्य घटनाओं का जन्म होने लगा है। अल्पवयस्क छात्र-छात्राएं अनेक गलत कार्यों में संलग्न होने लगे हैं ।

अतः हमें चाहिए की बच्चों को प्यार व दुलार के साथ अनुशासन में रखें। जैसा कि कहा भी गया है कि अति की भली न वर्षा, अति की भली न धूप अर्थात अति हमेशा खतरनाक एवं नुकसानदेह होता है। इसलिए अभिभावकों को बच्चों के साथ सभ्यता के साथ-साथ बच्चों को समझाना चाहिए। शिक्षकों का सही मार्गदर्शन भी छात्र-छात्राओं में नैतिक एवं भावनात्मक बदलाव तथा जागृति लाता है। अतः अभिभावकों तथा शिक्षकों का संयुक्त योगदान बच्चों के विकास हेतु आवश्यक है। अनुशासन 'प्रेरणा से लेकर सृजन तक' की श्रृंखला को देखता रहता है।

"कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया बदल देते हैं, और नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपने फैसले बदल लेते हैं।"

पी. वासुदेवन
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ ताजमहल ~

विदेशी पर्यटकों के लिए भारत में पर्यटन का मुख्य आकर्षण है - ताजमहल। यह सुंदर महल यमुना के किनारे स्थित है। ताजमहल दुनिया के 7 आश्चर्यों में से एक है। मुगल सम्राट शाहजहाँ ने इसे अपनी बेगम अर्जुमंद बानो की याद में बनवाया।

18 वर्षों के सुखमय वैवाहिक जीवन के बाद मुम्ताज बहुत बीमार पडी। शाहजहाँ ने तब उसकी याद में मकबरा बनवाने का वादा किया। मुम्ताज की मृत्यु के बाद शाहजहाँ ने दूर देशों से कलाकारों को बुलवाया और विभिन्न स्थानों से सामग्री मंगवाई - संगमरमर राजस्थान से, स्फटिक चीन से, मूल्यवान हीरे और पत्थर तिब्बत लंका, बगदाद आदि देशों से। ताजमहल बनाने में लगभग 22 वर्ष, 6 करोड रुपए लगे और 20,000 मजदूरों ने काम किया, जिनमें भारत के अलावा फारस और तुर्की के मजदूर भी थे। ताज की अपनी ही एक अलग अदा है जो दर्शकों को अपनी ओर खींच लेती है। कहते हैं कि इसके बनने के बाद, शाहजहाँ ने इसे बनाने वालों के हाथ कटवा दिये थे।

आज भी पर्यटक इसकी सुंदरता को देखने आते हैं। ताज उनकी सुंदरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह मुम्ताज और शाहजहाँ के प्रेम का प्रतीक है।

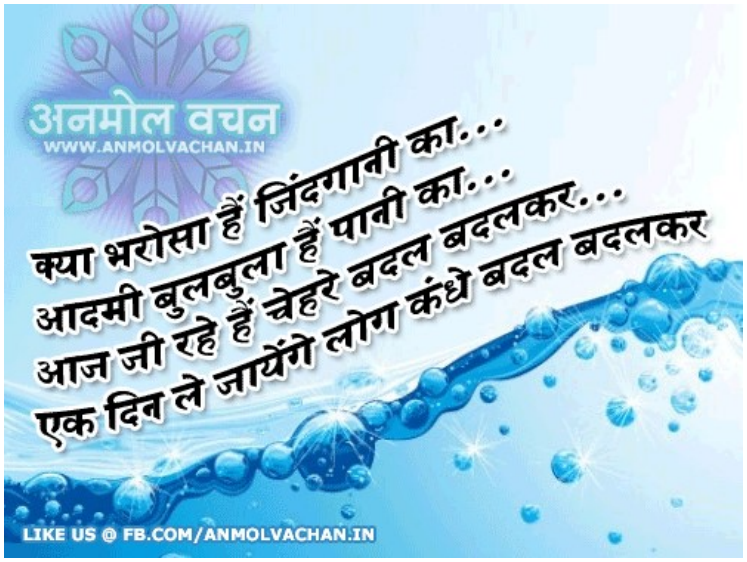

"ज़िंदगी आगे बढ़ने का नाम है, रुकने का नही!.."

एम. एस. वाणी,
हिंदी अधिकारी
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ विश्व हिंदी दिवस – 10 जनवरी ~

विश्व हिंदी दिवस हर साल 10 जनवरी को मनाया जाता है। विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति भी एक मानी जाती है। इसकी प्राचीनता का एक प्रमाण यहाँ की भाषाएँ भी हैं। भाषाओं की दृष्टि से कालखंड का विभाजन – वैदिक, लौकिक, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश और अव्हत, हिंदी का आदिकाल, माध्यकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में विभाजित किया जाता है।

भाषा की भूमिका के तौर पर मैं यह कहना चाहूँगी कि संसार में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ हैं। भाषा और बोली प्राय: स्थान-स्थान पर बदलती जाती हैं। इसीलिए यह कहा जाता है---

"कोस-कोस पर बोली बदले, तीन कोस पर पानी"

भाषा की विविधता में मुख्य रूप से भाषा के प्रकार हैं - मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और अंतर्राष्ट्रीय भाषा। इन सब में राष्ट्रभाषा का स्थान अति विशिष्ट है। यह इसलिए कि यह एक ऐसी भाषा होती है जिससे किसी राष्ट्र का स्वरूप और प्रभाव प्रकट होता है। इसके द्वारा ही राष्ट्र की अभिव्यक्ति, राष्ट्र की गति, राष्ट्र का न केवल अतीत, वर्तमान अपितु भविष्य भी प्रकट होता है। इससे अन्य राष्ट्र न केवल संपर्क में आते हैं बल्कि इससे प्रभावित भी होते हैं।

इसीलिए ही डॉ फादर कामिल बुल्के ने कहा था कि दुनिया भर में शायद ही ऐसी विकसित साहित्य भाषा हो जो सरलता में और अभिव्यक्ति की दक्षता में हिन्दी की बराबरी कर सके।

हिंदी का साहित्य 100 ईसवीं से प्राप्त होता है। लल्लूलाल द्वारा 1805 में लिखा गया 'प्रेम सागर' खडी बोली हिंदी में लिखा गया प्रप्रथम पुस्तक है जो आधुनिक हिंदी का मूल कहा जा सकता है। 1833-36 के बीच गुजराती के महान कवि श्री नर्मद ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।

1872 में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी कल्कत्ता में केशवचन्द्र सेन से मिले तो इन्होंने स्वामी जी को यह सलाह दिया कि आप संस्कृत छोडकर हिंदी बोलना आरंभ कर दें तो भारत का असीम कल्याण होगी। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिंदी हो गयी और शायद इसी कारण स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भाषा भी हिंदी ही रखी। 1873 में ही महेन्द्र भट्टाचार्य ने हिंदी में पदार्थ विज्ञान की रचना की। 1877 में श्रद्धाराम फिल्लौरी ने भाग्यवती नामक हिंदी उपन्यास की रचना की।

1893 में काशी नागप्रचारिणी सभा की स्थापना की गई। 1900वीं सदी का आरंभ हिंदी भाषा के विकास की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस समय देश में स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ हुआ था। और इसका माध्यम हिंदी ही थी। हिंदी पूरे भारतीय आंदोलन की भाषा बन चुकी थी। हिंदी को राजभाषा बनाने की पहल गांधीजी सहित देश के कई अन्य नेता भी कर रहे थे। सन् 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए गांधीजी ने कहा था कि हिंदी ही देश की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। क्योंकि राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लेना देश की उन्नति केलिए आवश्यक है। इसी सम्मेलन में मराठी भाषी लोकमानय बालगंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी। 1918 में ही महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की गई। 1935 में मद्रास राज्य के मुख्य मंत्री के हैसियत से डॉ. सी. राजगोपालाचारी ने हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

डॉ. भगवती चरण वर्मा ने इसी सिलसिले में कहा था भारतीयता का दूसरा नाम हिंदी है। आचार्य विनोबा बावे ने कहा था हिंदूस्तान की एकता केलिए हिंदी भाषा जितना काम देगी, उससे बहुत अधिक काम देवनागरी लिपि दे सकती है। भगत सिंह ने कहा कि समस्त देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श, और एक राष्ट्र बनाना पडेगा। परंतु समस्त एकताओं से पहले एक भाषा का होना जरूरी है ताकि हम एक दूसरे को भली भांति समझ सकें। इसकी ताकत पराई भाषा अंग्रेजी में नहीं बल्कि हिंदूस्तान की अपनी भाषा हिंदी में है। स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी का स्वरूप और प्रभाव बिल्कुल ही नहीं थी। जो कुछ था भी वह नगण्य अथवा होने के प्रयास में था। यह इसलिए कि अंग्रेजी सत्ता का प्रकोप हिंदी भाषा के प्रति भी था। यद्यपि इसे राष्ट्रभाषा और राष्ट्र मुख बनाने केलिए देश भक्तों ने अपने प्राणों के बलिदान किए। प्रमुख साहित्यकार बावू भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा था—

निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निजभाषा प्रेम के, मिटै न हिय के शूल।

कहने का अर्थ है कि बिना राष्ट्रभाषा के किसी प्रकार का कल्याण संभव नहीं है।

सतत प्रयासों के बाद भारत स्वतंत्र हुआ। भारत के स्वतंत्र होते ही हिंदी को महत्व दिया जाने लगा। इसे राष्ट्रभाषा बनाने केलिए चारों ओर से मान्यता मिलने लगी। इस प्रकार हिंदी भारत की राजभाषा बनी। भारत की राजभाषा ही नहीं अपितु विश्व भर में हिंदी का अपना एक स्थान उभरकर आने लगा। इसके कारण हैं:

1. हिंदी भारत के अलावा मारीशस, फ़िजी, सूरीनामा, गयाना, ट्रिनिडाड और टोबागो, पाकिस्तान और नेपाल आदि राष्ट्रों में भी बोली जाती है।
2. विश्व भर लगभग 500 मिलियन से भी ज्यादा लोग हिंदी को समझ लेते हैं और बोल लेते हैं।

3. अंग्रेजी की तुलना में हिंदी को आसानी से पढ सकते हैं और जैसे इसकी उच्चारण है वैसे ही इसको लिखना है। इसकी हर एक alphabet का स्वतंत्र ध्वनी है। जैसे अंग्रेजी में कडपा को cuddepha लिखते हैं लेकिन हिंदी में ऐसा झंझट नहीं है।

विश्व में हिंदी की स्थिति पर चर्चा करते हुए यह जान लेना भी आवश्यक है कि प्रयोक्ताओं की संख्या के आधार पर 1952 में हिंदी विश्व में पांचवे स्थान पर थी। 1980 के आसपास वह चीन और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई। 1991 की जनगणना में हिंदी को मातृभाषा घोषित करने वालों की संख्या के आधार पर पाया गया कि यह पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से अधिक है। इतना ही नहीं, डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल ने निरंतर 20 वर्ष तक भारत तथा विश्व में भाषाओं संबंधी आंकडों का विश्लेषण करके सिद्ध किया है कि विश्व में हिंदी भाषा को प्रयोग करनेवालों की संख्या चीनी से भी अधिक है और हिंदी अब प्रथम स्थान पर है। हिंदी ने विश्व की अंग्रेजी समेत अन्य सभी भाषाओं को पीछे छोड दिया है। भारत की जनगणना और भारतीय भाषाओं के विश्लेषण का ग्रन्थ प्रकाशित करने तथा संसार की भाषाओं की रिपोर्ट तैयार करने के लिए यूनेस्को द्वारा सन् 1998 में भेजी गई यूनेस्को प्रश्नावली के आधार पर उन्हें भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर महावीर सरन जैन द्वारा भेजी गई विस्तृत रिपोर्ट के बाद विश्व स्तर पर यह स्वीकृत किया गया है कि मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान है। चीनी भाषा के बोलने वालों की संख्या हिन्दी भाषा से अधिक है किन्तु चीनी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा सीमित है। अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा अधिक है किन्तु मातृभाषियों की संख्या अंग्रेज़ी भाषियों से अधिक है। इन्होंने अपने आलेख में हिन्दी की विश्व व्यापी लोकप्रियता का प्रतिपादन करते हुए यह अभिमत व्यक्त किया है कि हिन्दी की फिल्मों, गानों, टी. वी. कार्यक्रमों ने हिंदी को कितना लोकप्रिय बनाया है – इसका आकलन करना कठिन है। केंद्रीय हिंदी संस्थानों में हिंदी पढने के लिए ओन वोल 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की कि हिन्दी फिल्मों को देखकर तथा हिन्दी फिल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिली। लेखक ने स्वयं जिन देशों की यात्रा की तथा जितने विदेशी नागरिकों से बातचीत की उनसे भी जो अनुभव हुआ उसके आधार पर यह कहा है कि हिन्दी की फिल्मों तथा फिल्मी गानों ने हिन्दी के प्रसार में बहुत बडा योगदान दिया है। सन् 1995 के बाद से टी. वी. के चैनलों से प्रसारित कार्यक्रमों कीलोकप्रियता भी बढ़ी है।इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जिन सेटेलाइट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरम्भ केवल अंग्रेजी भाषा से किया था; उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा है। अब स्टार प्लस, जी. टी. वी., जी न्यूज, स्टार न्यूज, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक आदि टी. वी. चैनल अपने कार्यक्रम हिंदी में दे रहे हैं। दक्षिण पूर्व एशिया तथा खाडी के देशों के कितने दर्शक यह अनुसंधान का अच्छा विषय है। इन कार्यक्रमों को देखते हैं

"भीड़ हमेशा आसन रस्ते पर चलती है, जरुरी नहीं वो सही है। अपने रस्ते खुद चुनिए, आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता।"

1. हिंदी द्वारा हो रहे वाणिज्य की बात कहना है तो भारत में हिंदी समाचार पत्रों की बिक्री 48.5% है, अंग्रेजी की 7.5% और बाकी अन्य प्रांतीय भाषाओं की।
2. विश्व का सबसे बडा फिल्म इंडस्ट्रि बालिवुड की है।
3. चीन के एक कंपनी ने गुजरात में अपनी एक शाखा खोलने केलिए अंग्रेजी या किसी विदेशी भाषा नहीं बल्कि उन्होंने चीनी और हिंदी का ज्ञान आवश्यक है करके विज्ञापन दिया। चीन, जापान द्वारा तैयार किए जानेवाले इलेक्ट्रानिक साधनों, उपकरणों की बिक्री केलिए भारत जैसे विकासोन्मुख बाजारों की जरूरत है। यहाँ अपने उत्पादों को बेचने केलिए भारत में अधिकांश जनता द्वारा बोली एवं समझे जानेवाली हिंदी भाषा की आवश्यकता है। इतना ही नहीं मुंबई के सराफ बाजार में करोडों में शेयर लगाकर बाजी लगानेवाले व्यापारीगण हिंदी की जानकारी के बिना काम नहीं चला सकते।

अमरीकी पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने 114 मिलियन डॉलर की एक विशेष राशि अमरीका में हिंदी, चीन और अरबी भाषाएं सिखाने के लिए स्वीकृत की है। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी के महत्व को विश्व में कितनी गंभीरता से अनुभव किया जा रहा है।

अब विश्व हिंदी दिवस के बारे में बताना है तो जैसे आप सबको भी मालुम है विश्व हिंदी दिवस प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार प्रसार केलिए जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। इसी क्रम में विश्व में हिंदी भाषा का विकास करने और इसके प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व सम्मेलन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित की गई। इसीलिए 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। 1977 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जो तब विदेश मंत्री रहे, उन्होंने पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया। इन्हीं का अनुकरण करते हुए 1988 में विदेश मंत्री के रूप में श्री नरसिंहराव ने संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली में हिंदी में बोले।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी, 2006 को प्रतिवर्ष विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी। इसके बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी, 2006 को पहली बार विश्व हिंदी दिवस मनाया था।

वर्तमान युग में भाषा के वर्चस्वता की प्रतियोगितापूर्ण दौड में यदि विश्व हिंदी दिवस का आयोजन न किया जाए तो हम अपनी भाषिक शक्ति का न तो प्रदर्शन कर पाएंगे और न ही विश्व में फैले हिंदी प्रेमियों को एक मंच प्रदान कर पाएंगे। इसलिए विश्व हिंदी दिवस का आयोजन केवल एक आवश्यकता ही नहीं है बल्कि समय की मांग है। लेकिन समय की मांग के संग चलना सामान्यतया अत्यावश्यक होती है किंतु उस मांग की पूर्ति करना सामान्यतया एक कठिन चुनौती भी है। चूंकि विश्व में हिंदी फैली हुई है इसलिए विश्व हिंदी दिवस के द्वारा हिंदी

को सहज, सरल बनाने के साथ-साथ इसकी एक रूपता पर भी ध्यान देना आवश्यकता है। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। फिर भी विश्व भर में रहनेवाले अनिवासी भारतीयों की सशक्त टीम 'हिंदी भारतीयों के दिल की भाषा है' मानकर इसके फैलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

- हिन्दी यूएसए

  यह संस्था संयुक्त राष्ट्रसंघ अमेरिका (USA) में हिन्दी को भी वह स्थान दिलाने के लिये उद्यमशील है जो अन्य प्रमुख विदेशी भाषाओं को प्राप्त है। इसके साथ ही यह यूएसए में जगह-जगह हिन्दी विद्यालय खोलकर हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने की व्यवस्था कर रही है। हिन्दी के माध्यम से भारत की एकता को बढ़ावा देना भी इसका प्रमुख उद्देश्य है।

- हिन्दी सोसायटी सिंगापुर

  यह सिंगापुर में हिन्दी शिक्षण के लिये कार्यरत एक अलाभ यानी non-profitable संस्था है। वे मुख्यत: स्कूली बच्चों को हिन्दी शिक्षण देते हैं। साथ ही वयस्कों के लिये भी मौलिक, माध्यमिक और प्रगत हिन्दी की कक्षाएं चलातीं हैं। यह संस्था सन 1990 से कार्यरत है।

- अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति

- 1970 में अमेरिका के वर्जीनिया प्रान्त के रोसलीन में संस्थापित इस संस्था का उद्देश्य अमेरिका में हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के संवर्धन के लिये कार्य करना है। इसके संस्थापक डा. कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह हैं। यह संस्था एक त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वा' तथा एक न्यूजलेटर 'संवाद पत्र' भी प्रकाशित करती है।

मेरा यह स्वयं का अनुभव है कि जब मैं एसईआरसी में 31 साल पहले जॉइन की थी हिंदी के संबंध में तब की परिस्थिति और आज की परिस्थिति में बहुत फर्क दिखायी दे रही है। आजकल हमारे कार्यालय में 100 से भी अधिक कार्मिक हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग ले रहे हैं और हिंदी में सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करने केलिए भी अपने आप आगे आ रहे हैं। और खास कर तमिल भाषी कह रहे हैं कि हमने पहले ही हिंदी को सीखे बिना एक बडी गलती की है। यह बहुत सुन्दर भाषा है और पूरे भारतवासियों से संपर्क करने केलिए एक शक्तिशाली माध्यम है। हिंदी दिवस, हिंदी पक्ष, हिंदी माह आदि के आयोजन से आजकल सभी समझ रहे हैं कि किसी भी भाषा को सीखना गलत नहीं है बल्कि अत्यावश्यक है। इसी प्रकार विश्व हिंदी दिवस के आयोजन से हिंदी भाषा के प्रति और अधिक जागरूकता पैदा होगी।

अत: यह हम सबका दायित्व है और परम कर्तव्य भी है कि अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के शब्दों को, जो अब प्रचलन में हैं, उपयोग में लाएँ और हिंदी के पारिभाषिक शब्दों को शैनै: शैनै: प्रचलन में लाते रहें ताकि भाषा प्रदूषण न होने पाए। संक्षेप में कहें तो भाषा सिर्फ माध्यम ही नहीं बल्कि इसमें सात्विक व जैविक तत्व भी होते हैं जो समय के साथ आवश्यकतानुसार फलती-बढती विकसित होती जाती हैं। इसके लिए जरूरी है उस भाषा का शब्द भंडार को व्यापक प्रयोग में लाना। वास्तव में कोई शब्द न कठिन होता है न

सरल, वह केवल परिचित और अपरिचित होता है। जब तक हम किसी शब्द विशेष का उपयोग ही नहीं करेंगे और प्रचलन में नहीं लाएंगे, तब तक वह परिचित नहीं होगा। अत: आवश्यक है विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में तथा इसी प्रकार अन्य विषयों में पारिभाषिक शब्दों को प्रचलन में लाने की। इसी प्रकार किसी भी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द आना, देश काल परिस्थिति के अनुसार स्वाभाविक है। वास्तव में भाषा एक बडी नदी के समान है जिसमें अन्य भाषाओं के शब्द रूपी छोटी नदियाँ, नाले मिलते रहते हैं और नदी उन्हें आत्मसार करता जाता है।

हम सब विश्व हिंदी सम्मेलन का बोध वाक्य वसुधैव कुटुम्बक्कम को अपनाते हुए हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर प्रप्रथम स्थान पर बिठाने केलिए एक साथ कदम चलाएँ।

डॉ .एन .सुधाकर, सहायक अनुभाग अधिकारी

सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ गणतंत्र का महा नृत्य – आम चुनाव ~

गणतंत्र कहते ही पहले याद आती है आम चुनाव। भारत में चुनाव एक महोत्सव है जो पांच वर्षों में एक बार मनया जाता है। किन्तु राजनीतिक परिस्थितियां अनुकूल नहीं रहने से इसे असमय भी मनाया जा सकता है। परंतु इस बार ऐसा होने का अवसर ही नहीं पैदा हुआ। पाँच वर्ष पूरा होने पर चुनाव का माहौल छा गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमेशा की तरह चुनाव कहते ही गरीबी हटाओ नारे और रोजगार की बातें पहले झलकने लगती हैं। बाद में कुछ और तात्कालिक मुद्दें अवसर पा लेते हैं और अंतिम तौरे में एक विशिष्ट रूप लेता है जैसे Freebies का झकझोर वर्षा। हरेक कार्य में पंच तत्वों की महत्व होती हैं। उसी प्रकार चुनाव की कल्पना करते ही पाँच कारक तत्व हमारे सामने झलकने लगता है वे हैं 1. प्रत्याशी 2. कार्यकर्त 3. मतदाता 4. हिंसात्मक घटनाएँ 5. प्रशासन, जिनकी उपस्थिति के बिना देश में चुनावों की कल्पना करना बेईमानी होगी।

प्रत्याशी:

हर राजनीतिक दल जिसे चुनाव लड़ने का टिकट देता है वह अपने दल का अधिकृत प्रत्याशी कहलाता है। जिन उम्मीदवारों को अनेक जतन करने के बावजूद टिकट नहीं मिलता वे कभी-कभी निर्दलीय या बागी उम्मीदवार के वेष में नज़र आते हैं। आर्थिक रूप से सक्षम प्रत्याशी अपने धन के सदुपयोग से आचार संहिता की धज्जियां उड़ाते हुए गली-मोहल्लों से गुजरते हैं और जनता को अपने मोहपाश में उलझाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते हैं।

कार्यकर्ता:

चुनावी महोत्सव में प्रत्याशी के बाद यदि सर्वाधिक महत्वपूर्ण कोई व्यक्ति है तो वह नि:संदेह कार्यकर्ता है। कार्यकर्ताओं का यह दायित्व होता है कि प्रत्याशी का चुनाव टिकट पक्का होने के साथ ही वे जनसम्पर्क, मतदाता पर्ची वितरण, पार्टी कार्यालय स्थान चयन तथा प्रत्याशी के स्वागत इत्यादि का इंतजाम पूरी निष्ठा के साथ करें। इसमें समर्पण भाव से कार्य करने वाले कार्यकर्ता से डोंग रचानेवाले कार्यकर्ता अनेक अवसर पर प्रसाद के रूप में अपेक्षाकृत छोटे स्तर के चुनाव में टिकट पाने के हकदार बन जाते हैं। यह भी विधि की विडंबना है। नहीं तो परिश्रम करने वाला एक और उसका फल पाने वाला दूसरा है।

"जीतने का मजा तब ही आता है, जब सभी आपके..हारने का इंतजार कर रहे हो!"

प्रशासन:

चुनावी महोत्सव का एक महत्वपूर्ण घटक है प्रशास (चुनाव आयोग के तहत कार्य करने वाले अधिकारी गण)। चुनावों को निर्बाध कराने की सम्पूर्ण जवाबदेही प्रशासन की होती है तथा छुटपुट घटनाक्रमों को छोड़ कर इस दायित्व का निर्वहन प्रशासन सदा करता आया है। अधिकारियों के चुनावी प्रशिक्षणों से लेकर मत गणना तक का महत्वपूर्ण कार्य इसकी जिम्मेदारी होती है। प्रशासन से जुड़ा प्रत्येक अधिकारी-कर्मचारी इस बात से भली भांति मालूम होता है कि इस धरा पर जल के बिना जीवन हो सकता है किन्तु निलम्बन के बिना चुनाव होना असम्भव है।

मतदाता:

चुनाव यदि शरीर है तो मतदाता इसकी आत्मा है। जैसे जन्म लेते समय और मृत्यु के समय आत्मा के बारे में विचार विमर्श किया जाता है वैसे ही चुनाव के समय मतदाता के बारे में और उनकी दुःख दर्दों पर विचार किया जाता है। चुनावी महोत्सव में जो प्रपंच रचा जाता है वह सिर्फ मतदाता आकर्षित करने के लिए होता है। अधिक मतदाता इस त्यौहार का सम्पूर्ण लाभ लेता है तथा अपने मत की आहुति देकर खुश रहता है। मतदाता और प्रत्याशी का मिलन आम तौर पर चुनावों के दौरान ही होता है तथा इसके बाद सम्भवतः ये एक-दूसरे से अजनबी ही रहते हैं।

हिंसात्मक कार्य:

चुनाव की इस महा रुद्र तांडव में हिंसात्मक कार्य न हो तो मजा ही क्या? इसलिए हरेक चुनाव में कम से कम हजारों की संख्या में बली नहीं चढाई जाए तो यह कार्य पूर्ण नहीं हो पाता। इस विषय में कोई भी दल कम नहीं हैं और समान मत रखते हैं ।

अंत में यही कहना चाहिए कि चुनाव के इस महा ताण्डव यज्ञ में प्रत्येक द्वारा दी जा रही आहुति का अपना महत्व है। इसी आशा से हर चुनाव का सुस्वागत किया जाता है कि आम व्यक्ति को इस प्रजातान्त्रिक प्रक्रिया से उसकी आम समस्याएं सुलझाने में सहयोग मिल सकता है। चुनाव में कौन जीता और कौन हारा यह तो आगे आनेवाले पाँच वर्ष ही बता सकेगा।

जय मतदाता जय राजनेता जय आम चुनाव

अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत

- Translation: What is the use of crying when the birds ate the whole farm?
- English equivalent: It's no use crying over spilled milk.
- "It's no use crying over spilt evils. It's better to mop them up laughing."

एस. वैभव
वी. श्रीनिवासन के पुत्र
V 'A', केंद्रीय विद्यालय सी. एल. आर. आई. ,
अड्यार, चेन्नई-20

~ कहानी ~

एक सुन्दर जंगल था। इस जंगल देखने में बहुत सुरम्य था। उधर पक्षियां और जानवर खुशी से रहते थे। उस जंगल में चार जानवर दोस्त थे। वे शेर, भेडिया, बाघ और शियार थे। एक दिन वे शिकारी करने गये। अगले दिन में सिर्फ एक हिरन को शिकार किया उस हिरण को खाने के लिए उन चार लोगों ने सोचा कि वे साझा करें और खाए। उस शेर ने कहा कि वो जंगल का राजा है। इसलिए मैं आधा भाग ले लूँगा। दूसरा आधा भाग आप तीन लोगों का है। पहले वो हिचकिचाते रहे और सोचा कि वो शेर के साथ लडाई नहीं कर सकते और उसने शेर की बात मान लिया।

हमेशा प्रकृति के साथ समायोजित करें।

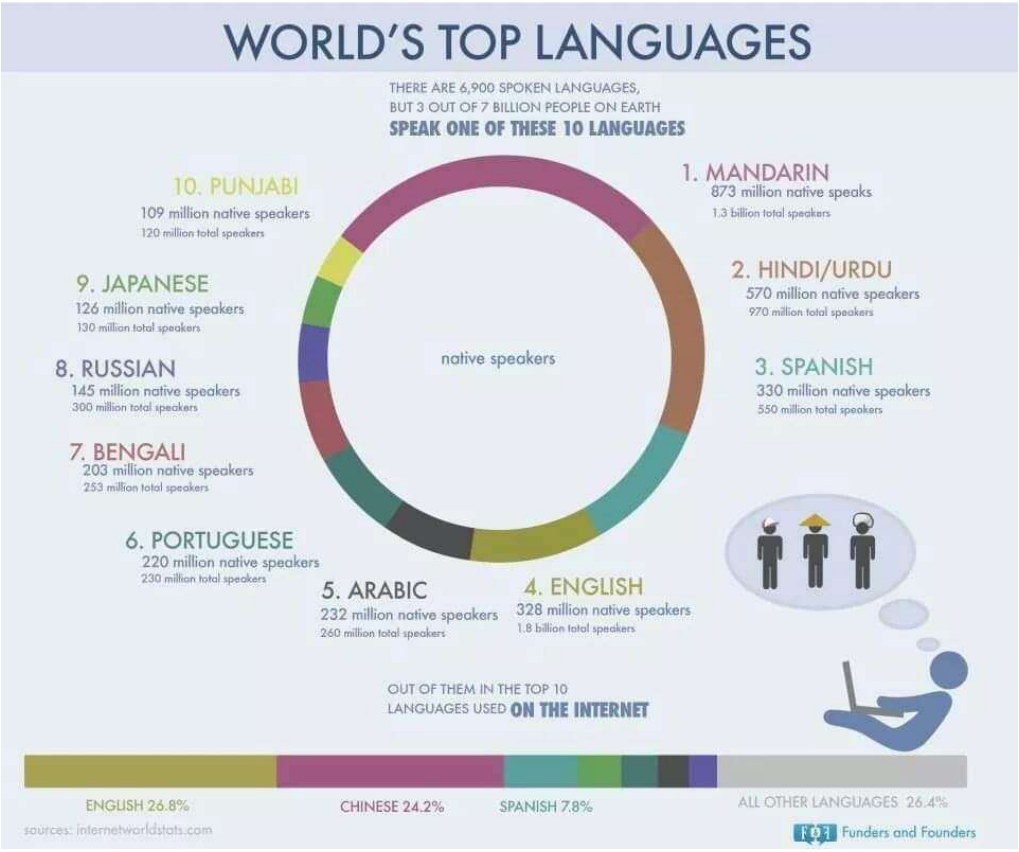

कु. बी. याश्विनी
डा. के. बालाजी राव की पुत्री

~ धर्म निरपेक्षता की महत्व ~

धर्म का केवल उपदेश दिया जा सकता है आदेश नहीं। धर्म के पाँच मूलाधार हैं। करुणा, धैर्य, प्रेम, समर्पण व त्याग। जब व्यक्ति धर्म के इन पाँच आधारों को आत्म सात करता तो आत्मा को परमानंद की अनुभूति होती है और वह जीवन चक्र से मुक्ति पा सकता है। ज्ञान बुद्धि को स्थिर कर सकती है, धैर्य चित यानि कि शरीर को स्थिर और पूर्णतः समर्पण आत्मा को स्थिर कर सकता है। जब आत्मा धर्म को प्राप्त कर परम आनंद की अनुभूति करती है तो वह परमात्मा में लीन हो जाती है।

जीवन का दूसरा पर्याय संर्घष है। जीवन बाधाओं से भरा होता है। जब निर्णय लेना कठिन हो तब, धर्मों के स्मरण से उचित-अनुचित का भेद करता है। धर्म को स्मरण करने के लिए कोई वस्तु की सहायता लेने से विकट परिस्थिति में भी निर्णय लेना सरल हो जाता है। कभी-कभी परिस्थितियाँ गंभीर व असामान्य हो जाती हैं कि जो सभी के लिए धर्म हो, वह समाज के कल्याण या उद्धार न कर पाते हैं। तब आपद धर्म का ज्ञान आवश्यक हो जाता है। अनिवार्यता यह है कि हम अपने निजी स्वार्थ त्याग कर समाज के सम्मुख एक अनुसरणीय उदाहरण स्थापित कर सके। जब मंतव्य व भावनाएं शुद्ध होती हैं तब अधर्म भी धर्म में परिवर्तित हो जाती है। धर्म का अनुसरण कठिन नहीं होती है जब हमें अपने कर्तव्यों का भान हो और अपना लक्ष्य ज्ञात हो। मानव, किसी भी जीव या वस्तु का केवल रस जगत में एक संबंधी होता है - कर्म हर जीव या वस्तु इसीलिए अस्तित्व में आता है ताकि वह अपना कर्म का निर्वाहन कर सके।

जीव अपनी शक्ति व मोह के आधार पर अपनी शक्तियों को दुरुपयोग करने पर वह धर्म और पद उसकी अंकार के पाष को चीरकर सत्य, व वास्तविकता के धरातल पर गिर जाता है, तब उसे असीमित घात व असहनीय पीड़ा पहुँचती है। व्यक्ति या किसी भी जीव को यह विषय सदैव अपने जीवन में स्मरण रखना चाहिए कि - पद व्यक्ति को सुशोभित नहीं बल्कि व्यक्ति पद को सुशोभित करता है। और ऐसा कोई पदवी नहीं जिसको या उस पद में विराजमान जीव को बदला जा सके।

धर्म संकट वह स्थिति है जब मनुष्य के जीवन के एक घाट में सुख होगी और दूसरी विपरीत घाट पे धर्म। मानव अपने धर्म को छोड़ सहर्ष सुख की ओर अपनी दिशा बदल दे सकता है। पर धर्म को चुनकर उसे सफलता व सुख कभी अन्यों का प्रेम पाने कि लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। यदि मानव धर्म के मार्ग से पलायन करता है तो सुख मिलता है, पर वह सुख जो उसके जीवन पर लन्चन बन जाए, कभी उसके चयन कि अत्मग्लानी जीवन से भी बड़ा हो जाए और उसी के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह बन जाए।

हस्यास्पद केवल यह है कि हम इसी स्थित को धर्म संकट कह ही नहीं पाते। व्यक्ति के लिए हर एक क्षण महत्वपूर्ण होता है। हर क्षण एक महत्वपूर्ण निर्णय लेने का होता है जो हमारे कर्मों के तात्पर्य को समझा सके। कभी न्याय के लिए हर समय आवाज़ उठाने की आवश्यकता नहीं होती है। हमेशा शक्ति से अधिक योग्य युक्ति होती है।

व्यक्ति को सदैव स्थिति के गंभीरता के विषय में समझाना आवश्यक नहीं है, उसे परिस्थिति की गंभीरता का आभास करना चाहिए जिससे वह और भी उचित व न्याय सम्मत निर्णय ले सके। अनुभव होनी चाहिए कि वह किस धर्म का बंदा है और कौन कर्म स्वयं उसके लिए और अपने से जुड़े लोगों का कल्याण कर सके।

शांति हर चिंता और दुविधा का समाधान नहीं है। हमें आपद कालीन स्थितियों में भी मन व बुद्धि को स्थिर रखना है जिससे उसे उचित एवं अनुचित का भान हो।

इस संसार में कुछ भी सदैव के लिए नहीं। कुछ भी स्थिर नहीं। सब कुछ परिवर्तित हो जाता है। समय एवं सृष्टी दोनों के एक ही नियम है - परिवर्तन।

मनुष्यों की इच्छा बदलती है, सोच-विचार धारा बदलती है, युग परिवर्तित होते हैं, लोगों की भूमिका बदल जाती है। हमारे जीवन में कितने परिवर्तन होने वाले हैं यह कह पाना, इसकी गणन करना असंभव है।

पर समय चक्र भी अत्याधिक रूप से विचित्र है। जितनी उसे समझने का प्रयत्न करो उतना ही उलझ जाएंगे। या यूँ कहें कि उत्तर समीप ही हो पर उस उत्तर से दूर रहने की अनुभूति होती है। समय किस दिशा की ओर गतिशील है, उन्मुख वह केवल इस पर निर्भर है कि हम जीवन के किस बिन्दू पर खड़े हैं। यह आवश्यक नहीं समय केवल भविष्य की ओर ही गतिमान रहे जैसे, एक व्यक्ति अपने जीवन में आगे बढ़कर कुछ अर्जित करना चाहता है पर कभी वह अपने-आप को अपने प्रारंभ बिन्दू में पाता है जो उसे उसके कर्मों और सिद्धांतों पर आत्म मंथन और विचार करने पर विवश कर देते हैं। हर जीव इस तथ्य से समय-चक्र से बाह्य है।

एक घटना हमें बहुत कुछ सिखा जाती है। जीवन घटनाओं का हार ही तो है जिसके हर एक मोती में सुख व दुख परस्पर जुड़े हैं। घटना हमें नवीन अनुभव दिलाते हैं, और अनुभव ज्ञान देता है। अनुभवों के आधार पर हमारी दुनिया को देखने का दुष्टिकोण निर्मित होता है। इससे हम जीवन के दो पहलुओं के सक्षम होते हैं। पर जो व्यक्ति अपने आप को इस विश्व के कारण पीड़ित घोषित कर बैठे वह व्यक्ति कभी अनुभव के उस भोर अर्थ को समझने में असक्षम ही रह जाता है। जो अपने अनुभवों को अपने समीप, स्मृति पटल भोर संजोग में रखता है और उन अनुभवों से अपनी स्थिति से उसकी तुलना करता है उसे अवश्य उस घटना क्रम का अर्थ समझ में आ जाता है।

घटना को समझने से पहले यह तथ्य मन से उतार लेना अनिवार्य है कि इस संसार में जो कुछ भी घटित होता है उसके पीछे एक घोर अथवा महत्वपूर्ण कारण होता है। कभी-कभी अनुभव के स्पष्टीकरण तर्क टीम होते हैं पर इसके पीछे का तात्पर्य भविष्य में प्रत्यय होना निश्चित है।

भावुकता जो किसी भी प्रकार के भावना के अधिकता के कारण उत्पन्न होने वाला स्थिति। रस के अनुसार हृदय में दो ही स्थाई भाव होते हैं - सुख व दुख। जब कोई कठिन परिस्थिति आए, या धर्म संकट उत्पन्न हो तो भावुक होना स्वाभाविक होगा। किसी भावना के अधिक प्रबल हो जाने से व्यक्ति सही समय पर उचित एवं नीतिसम्मत निर्णय नहीं ले पाता।

अधिकांश स्थितियों में देखा गया है, और देखा जाएगा कि भावुकता हमारे विवेक को शीन कर देती है, कभी-कभी यह असुरक्षा जैसे दुर्भावनाओं को जन्म देती है जिसके चलते व्यक्ति अराजगता और अपने मर्यादाओं के चरम पर पहुँच जाता है। ऐसे व्यक्ति का पतन वही से प्रारंभ होता है। भावुक क्षणों में व्यक्ति को धीरज और धैर्य के साथ क्रियावान होना चाहिए। अन्यथा भावनाओं के तले कचलकर वह दूसरों का व स्वयं का भी अहित कर बैठता है।

स्वतंत्रता, चाहे विचारों की हो या किसी और क्षेत्र में तब तक घातुक नहीं जब तक किसी और के स्वतंत्रता के सीमा और मर्यादा निर्धारित कर दे। यदि हम इस समाज से भिंन्न प्रतीत होते हैं तो इसका अर्थ यह कहा भी नहीं होनी चाहिए कि हम किसी के सम्मान को ठेस पहुँचाएं।

त्यागी वह नहीं जो अपना सब कुछ त्याग कर दे, त्यागी वह होता है जो त्याग करते हुए अपने महला का गुणगान न करे। त्यागी त्याग के बदले सुख की अपेक्षा नहीं करता, अपितु अपने उपकारों को भूलकर दूसरों की अपेक्षा न करे और उनके दुखों को स्वयं का दुख समझे। त्यागी अपने किए गए कर्मों को कभी सिद्ध नहीं करता और अपने उपकारों के ऋण को कभी नहीं जताता।

इतिहास साक्षी है कि त्यागी जाति से नहीं अपने कर्मों से और अपने चरित्र से पहचाना जाता है।

हाथ कंगन को आरसी क्या

- Transliteration: Haath kng'gan ko aar'si kya
- Translation: You don't need a mirror to look at the wound in your palm.

गायत्री राजेंद्र रोकड़े
राजेंद्र पीतामबर रोकड़े की पुत्री

~ बंदर ~

जंगल से एक दिन भागा बंदर।
दौड़ा वो शहर-शहर।
दूर देखा उसने एक घर।
जानना चाहा क्या है अंदर।
झांक रहा था घर के भीतर।
देख रहा था नीचे-ऊपर।
बुढ़िया ने दे मारा पत्थर।
टूट गई बंदर की कमर।
समझ गया तुरंत ही बंदर।
यहां नहीं है उसका घर।
जंगल की ओर भागा बंदर।
फिर नहीं गया किसी शहर।
पराग राजेंद्र रोकड़े।

हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँच जा सकता - डॉ. लूथर, जर्मन विद्वान

गायत्री राजेंद्र रोकड़े
राजेंद्र पीतामबर रोकड़े की पुत्री

~ पेड़ों का महत्व ~

पेड़ों से हरे-भरे हमारे वन हैं।
पेड़ों से ही हमारा जीवन है।
पेड़ों में ही पार्वती शिवन हैं।
उनके पूजन से जीवन पावन है।
पेड़ों से मिलता हमें भोजन है।
उन्हीं से बनते हमारे और पशुओं के सदन हैं।
कागज़,पेंसिल, रबर में पेड़ों का योगदान है।
पेड़ों में ही आयुर्वेद का विज्ञान है।
पेड़ों से ही हवा,पानी और ऑक्सीजन है।
उन्हीं से हर कण-कण में प्राण हैं।
पेड़ों से ही पक्षियों की चहकती मुस्कान है।
पेड़ों से ही रिमझिम बरखा सावन है।
जब धूप से थक कर कभी होते परेशान हैं,
पेड़ों की शीतल छाया में पाते सकून है।
बरगद,पीपल,आम,देवदार पेड़ महान है।
इनके नीचे ही संतों ने पाया जीवन का ज्ञान है।
इसी तरह पेड़ हमारे जीवन में वरदान हैं,

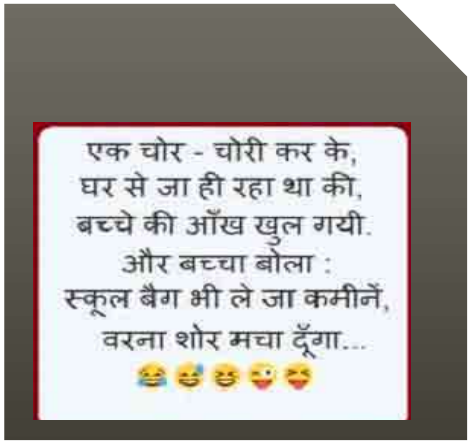

क्योंकि इनका हमारे जीवन में बड़ा अनुदान है।

इन्हें काटने से हमारा ही बड़ा नुक़सान हैं।

बिना पेड़ यह धरती सुखा रेगिस्तान है,

जैसे मंगल पर नहीं किसी जीव का नामों निशान है।

आओ सब मिलकर लेते वचन है।

पेड़ों का सबको मिलकर करना संवर्द्धन है।

क्योंकि पेड़ों से ही इस वसुंधरा की शान है।

पेड़ों से ही हरे-भरे वन और जन जीवन है।

भारत की सच्ची आत्मा का ज्ञान हिंदी द्वारा ही हो सकता है

ईशा राजेंद्र रोकड़े
राजेंद्र पीतामबर रोकड़े की पुत्री

🦋 रंगीली तितली 🦋

ति*तली तितली!*
एक दिन मुझसे मिली।
वह तो जैसे पहेली।
जाने क्या है उसकी बोली।
पंखुड़िया अपनी उस ने खोली।
कितनी सुंदर रंग-रंगीली।
जैसे रंगो की होली,
क्या तुमने है खेली?
फूल, फूल, डाली, डाली।
जाने कहां है तुम्हारी नगर हवेली।
पर तुम तो हो मेरी प्यारी सहेली।
तितली-तितली कितनी रंग-रंगीली।

"आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, लेकिन आप अपनी आदतों को बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतों से आपका भविष्य बदल सकता है"

आर. अमोर्धवल्ली
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ सीवन द नेचर के लिए ले जानी वाली शपथ – समय की आवश्यकता ~

प्रकृति...। हम इसे "माँ प्रकृति" कहते हैं... उसने हमें अपनी जरूरत की सभी चीजें दी हैं, अर्थात्, भोजन, कपड़ा और आश्रय। सभी जीवित प्राणी पूरी तरह से माँ की प्रकृति पर निर्भर हैं और जब तक उन्हें सम्मान दिया जाता है हम सुरक्षित क्षेत्र में हैं। हम अपनी आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से प्रदान करेंगे। लेकिन उसके पोषण के बजाय हमने उसके दिल पर भारी बोझ डाला है:

- *जनसंख्या से अधिक*
- *सभ्यता प्रक्रिया*
- *वनों की कटाई*
- *वन जानवरों के निवास स्थान को परेशान करना*
- *भूमि क्षरण*
- *औद्योगीकरण और वैश्वीकरण*
- *प्राकृतिक संसाधनों की कमी*

प्रकृति द्वारा उत्पन्न मुख्य विनाश ग्लोबल वार्मिंग है। ग्लोबल वार्मिंग 20 वीं शताब्दी के मध्य से पृथ्वी की निकट-सतह की हवा और महासागरों के औसत तापमान में वृद्धि और इसकी अनुमानित निरंतरता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर पिघलेंगे और समुद्री जल का स्तर बढ़ेगा। अगर ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन पूरी धरती डूब जाएगी।

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है।

- अमरनाथ झा

अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम प्रकृति को होने वाले नुकसान को रोकें। हम सभी क्या कर सकते हैं हम सभी कुछ सरल लेकिन प्रभावी उपायों का पालन कर सकते हैं, जो इस प्रकार है: -

1. *अधिक से अधिक पेड़ लगाएं।*	2. *जरूरत न होने पर लाइट बंद कर दें।*	3. *बल्ब की जगह सी.एफ.एल का प्रयोग करें।*
4. *सार्वजनिक परिवहन का अधिक से अधिक उपयोग करें*	5. *दूरी के पास यात्रा के लिए चक्र का उपयोग करें ।*	6. *कार पूल को प्रोत्साहित करें।*
7. 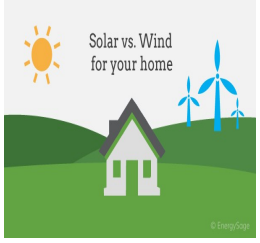 *घरेलू उद्देश्य के लिए सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का उपयोग करें।*		

"आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, लेकिन आप अपनी आदतों को बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतों से आपका भविष्य बदल सकता है"

पी .सुरेश
जन सूचना अधिकारी
सी एम सी

~ सूचना का अधिकार अधिनियम, 2004 ~

प्रत्येक लोक प्राधिकारी के कार्यकरण में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के संवर्धन के लिए, लोक प्राधिकारियों के नियंत्रणाधीन सूचना तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए नागरिकों के सूचना के अधिकार की व्यावहारिक शासन पद्धति स्थापित करने, एक केन्द्रीय सूचना आयोग तथा राज्य सूचना आयोग के गठन करने और उनसे संबंधित या उनके आनुषंगिक विषयों के उपबंध करने के लिए अधिनियम।

सूचना का अधिकार एक कानून है, जिसके अंतर्गत देश का लोकतंत्र मजबूत होता है और प्रशासनिक कार्यों में आज नागरिकों की सहभागिता बढ़ती है।

यह एक विशेष तरह का कानून है, जिसका अविर्भाव वर्ष 2004 में हुआ था । इस कानून का सबसे बड़ा उद्देश्य आम लोगों को सरकार से सवाल करने का हक़ है। इस कानून की सहायता से कोई भी आम व्यक्ति किसी भी सरकारी कार्यालय में अपना आर. टी. आई. दर्ज करा कर किसी भी तरह की जानकारी प्राप्त कर सकता है ।

यह कानून भ्रष्टाचार को रोकने का एक बहुत बड़ा रास्ता साबित किया है । यह कानून - जम्मू और कश्मीर को छोड़ कर भारत के सभी राज्यों में लागू है । इस कानून का प्रयोग करके कोई व्यक्ति किसी सरकारी संस्थान से जानकारी के लिए अपना आवेदन दे सकता है , जिसका जवाब उस सरकारी संस्थान को महज 30 दिनों के अंदर देना होता है ।

सूचना का अधिकार का प्रयोग इन तीन मुख्य दर्जों / कार्यों में किया जाता है ।

1. जब किसी सरकारी सेवा में देर हो ।
2. संस्थानों की निष्क्रियता पर
3. अन्य विशेष जानकारियाँ

सूचना का अधिकार के तहत सूचना मांगे जाने के लिए निर्धीत फीस 10 रूपये है और अगर बी पी एल परिवार से संबधित है तो कोई भी फीस नहीं लिया जायेगा ।

सूचना के अधिकार के दायो में आने वाले विभाग ।

- राष्ट्रपति , प्रधानमंत्री, राज्यपाल और मुख्यमंत्री दफ्तर

- संसद और विधानमंडल

- चुनाव आयोग

- सभी अदालतें

- तमाम सरकारी दफ्तर

- सभी सरकारी बैंक

- सारे सरकारी अस्तपाल

- पुलिस , महकमा

- सेना के तीनों अंग

- पी एस यू

- सरकारी बीमा कंपनिया

- सरकारी फ़ोन कंपनिया

सरकार की सुरक्षा से सम्बंधित जानकारी या गोपनीय जानकारी इस अधिकार के अंतर्गत नहीं आती ।

सूचना का अधिकार के अंतर्गत आवेदन देने एवं सूचना प्राप्त करने के लिए आवेदन का निम्न प्रकिया अपना सकता है ।

- अपने हाथों से आवेदन लिख सकते हैं ।

- ऑनलाइन के माध्यम से भी आवेदन भेज सकते हैं – http://rtionline.gov.in

- सूचना अधिकारी के माध्यम से भी प्राप्त कर सकते हैं ।

पी. प्रिया
एस एस ए
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ भारत में बाल श्रम की समस्या ~

हमारा देश एक विशाल देश है। इस देश में सभी धर्मों, जातियों, वेश-भूषा व विभिन्न संप्रदायों के लोग निवास करते हैं । देश ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सफलता के नए आयाम स्थापित किए हैं।

देश एवं राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य के निर्माता उस देश के बच्चे होते हैं। अत: राष्ट्र, देश एवं समाज का भी दायित्व होता है कि अपनी धरोहर की अमूल्य निधि को सहेज कर रखा जाये । बालश्रम की समस्या से आज देश ही नहीं अपितु विश्व के अधिक देश ग्रस्त हैं ।

विकास की आधुनिक दौड़ में हम अन्य देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं । परंतु इतनी सफलताओं के पश्चात् भी जनसंख्या वृद्धि, जातिवाद, भाषावाद, बेरोजगारी, महँगाई आदि अनेक समस्याएँ हैं जिनका निदान नहीं हो सका है अपितु उनकी जड़ें और भी गहरी होती चली जा रही हैं। बाल-श्रम भी ऐसी ही एक समस्या है जो धीरे-धीरे अपना विस्तार ले रही है।

इस समस्या का जन्म प्राय :पारिवारिक निर्धनता से होता है। हमारे देश में आज भी करोड़ों की संख्या में ऐसे लोग हैं जो गरीबी की रेखा के नीचे रहकर अपना जीवन-यापन कर रहे हैं । ऐसे लोगों को भरपेट रोटी भी बड़ी कठिनाई और अथक परिश्रम के बाद प्राप्त होती है। उनका जीवन अभावों से ग्रस्त रहता है।

इन परिस्थितियों में उन्हें अपने बच्चों के भरण-पोषण में अत्यंत कठिनाई उठानी पड़ती है। जब परिस्थितियाँ अत्यधिक प्रतिकूल हो जाती हैं तो उन्हें विवश होकर अपने बच्चों को काम-धंधे अर्थात् किसी रोजगार में लगाना पड़ता है। इस प्रकार ये बच्चे असमय ही एक श्रमिक जीवन व्यतीत करने लगते हैं जिससे इनका प्राकृतिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

“अभी तो तेरे पखं उगे थे,

अभी तो तुझको उड़ना था ।

जिन हाथों में कलम शोभती,

उनमें कुदाल क्यों पकड़ाना था!

मूक बधिर पूरा समाज है,

उसे तो चुप ही रहना था ।”

देश में श्रमिक के रूप में कार्य कर रहे 5 वर्ष से 12 वर्ष तक के बालक बाल श्रमिक के अंतर्गत आते हैं । देश में लगभग 6 करोड़ से भी अधिक बाल श्रमिक हैं जिनमें लगभग 2 करोड़ से अधिक लड़कियाँ हैं। यह बाल श्रमिक देश के सभी भागों में छिटपुट रूप से विद्यमान हैं। देश के कुछ भागों, जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा में इन श्रमिकों की संख्या तुलनात्मक रूप से अधिक है।

देश में बढ़ती हुई बाल-श्रमिकों की संख्या देश के सम्मुख एक गहरी चिंता का विषय बनी हुई है । यदि समय रहते इसको नियंत्रण में नहीं लाया गया तब इसके दूरगामी परिणाम अत्यंत भयावह हो सकते हैं। हमारी सरकार ने बाल-श्रम को अपराध घोषित कर दिया है परंतु समस्या की जड़ तक पहुँचे बिना इसका निदान नहीं हो सकता है।

अत: यह आवश्यक है कि हम पहले मूल कारणों को समझने व दूर करने का प्रयास करें । बाल-श्रम की समस्या का मूल है निर्धनता और अशिक्षा। जब तक देश में भूखमरी रहेगी तथा देश के नागरिक शिक्षित नहीं होंगे तब तक इस प्रकार की समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी रहेंगी।

देश में बाल श्रमिक की समस्या के समाधान के लिए प्रशासनिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत सभी स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं। यह आवश्यक है कि देश में कुछ विशिष्ट योजनाएँ बनाई जाएँ तथा उन्हें कार्यान्वित किया जाए जिससे लोगों का आर्थिक स्तर मजबूत हो सके और उन्हें बच्चों को श्रम की ओर विवश न करना पड़े।

प्रशासनिक स्तर पर सख्त से सख्त निर्देशों की आवश्यकता है जिससे बाल-श्रम को रोका जा सके। व्यक्तिगत स्तर पर बाल श्रमिक की समस्या का निदान हम सभी का नैतिक दायित्व है। इसके प्रति हमें जागरूक होना चाहिए तथा इसके विरोध में सदैव आगे आना चाहिए।

हमें विश्वास है कि हमारे प्रयास सार्थक होंगे और बाल श्रमिक की समस्या का उन्मूलन हो सकेगा । राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार की व्यवस्था जन्म लेगी जिससे पुन :किसी बालक को अपना बचपन नहीं खोना पड़ेगा । ये सभी बच्चे वास्तविक रूप में बढ़ सकेंगे तथा अच्छी शिक्षा ग्रहण कर देश को गौरवान्वित करेंगे ।

कानून को और सख्त बनाने की आवश्यकता है ताकि कोई भी व्यक्ति इस कुप्रथा को बढ़ावा न दे सके । बाल श्रमिक की समस्या के निदान के लिए सामाजिक क्रांति आवश्यक है ताकि लोग अपने निहित स्वार्थों के लिए देश के इन भावी निर्माताओं व कर्णधारों के भविष्य पर प्रश्न-चिह्न न लगा सकें ।

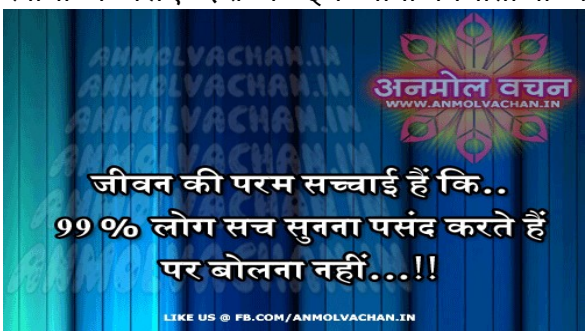

एम. मैमून मोघल
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ जैव विविधता ~

जैव विविधता

सी एस आई आर – एस ई आर सी कैंपस के जीव जंतु, पौधे और पेड़ों की विविधता की एक झलक

जैव विविधता (biodiversity) मतलब पृथ्वी पर जीवन की विविधता। इसमें सभी जीवित जीव और पारिस्थितिक तंत्र शामिल हैं जिसमें वे होते हैं। साथ में वे एक जटिल संतुलन बनाते हैं जो प्राकृतिक दुनिया में जीवन की निरंतरता और ऑक्सीजन, ताजे पानी और प्राकृतिक संसाधनों की एक विस्तृत विविधता सुनिश्चित करता है जो हमारे लिए आवश्यक हैं। प्राकृतिक संसाधनों के हमारे उपयोग के लिए आवास विनाश और प्रदूषण से, मानव प्राकृतिक प्रणालियों पर अपना टोल ले रहे हैं जो विश्व को क्रियाशील रखती हैं। मानव भलाई हमारे प्राकृतिक पर्यावरण के साथ अंतरंग रूप से जुड़ी हुई है एक जैव विविधता योजना या रणनीति औपचारिक रूप से हमारी संस्था में स्थापित की जानी चाहिए जो परिसर में जैव विविधता को बनाए रखेगी और बेहतर बनाएगी। निवास और प्रजातियों की एक सूची तैयार करना चाहिए। दूसरा, जागरूकता बढ़ाना जैव विविधता संरक्षण का एक महत्वपूर्ण साधन है हमारे परिसर में पाई जाने वाली जैव विविधता के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

"जो व्यक्ति धैर्य का मालिक है वो बाकि सभी चीजों का मालिक है "

Plant diversity पौधों की विविधता (Some images are representative of the species and not photographed on the campus)

Banyan -- *Ficus Benghalensis* -- बरगद		**Tamarind** -- *Tamarindus indica* - इमली	
Java Plum -- *Eugenia jambolana*, or *Syzygium cumini* – जामुन		**Queen's Flower** -- *Lagerstroemia speciosa* – जरुल	
Rain Tree - *Samanea saman* or *Albizia sama* – गुलाबी सिरिस		**Neem** -- *Azadirachta indica* – नीम	

Indian Beech - *Pongamia pinnata* – करंज		**Temple Tree** - *Plumeria rubra* (also called *Plumeria acuminata* or *Plumeria acutifolia*) – गुलैन्ची	
Indian Almond -- *Terminalia catappa* -- **जंगली बादाम**		**Cannon-ball Tree** -- *Couroupita guianensis* – नागलिंग	
Copperpod(Rusty Shield Bearer) -- *Peltophorum pterocarpum* - पीला गुलमोहर		**Gulmohar** - Delonix regia - गुलमोहर	

Blue jay butterfly तितली		Lime butterfly तितली	
Ladybird beetle मोगरी		Praying mantis आक	

इंग्लैंड में हमारा क्रान्तिकारियों का दल था। हम प्रति दिन प्रण दुहराते थे कि हमारा देश हिंदुस्तान, हमारा गीत वन्देमातरम, हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है। - विनायक दामोदर सावरकर

एम. मैमून मोघल
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ मंजिले चाहे कितनी भी ऊँची या कठिन हों ~

मंजिले चाहे कितनी भी ऊँची या कठिन हों,

रास्ते हमेशा पैरों के नीचे ही होते हैं ।

जीवन का रहस्य केवल आनंद नहीं है ,

बल्कि अनुभव के माध्यम से सीखना है ।

जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सके, मनुष्य बन सके,

चरित्र गठन कर सके और विचारों का सामंजस्य कर सके।

वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है ।

(स्वामी विवेकानंद)

उत्तम शिक्षा वो है जो हमें सिर्फ जानकारी ही नहीं देती

बल्कि हमारे जीवन को समस्त अस्तित्व के साथ सद्भाव में लाती है।

(रविंद्रनाथ टैगोर)

अजूबा यह नहीं कि हमने किसी कार्य को कर दिखाया है,

बल्कि यह है कि हमें उस कार्य को करके प्रसन्नता हुई है. **(मदर टेरेसा)**

हिंदी के माध्यम से सारे भारत को एकता के धागे में पिरोया जा सकता है – दयानन्द सरस्वती

जो तकलीफ तुम

खुद बर्दास्त नहीं कर सकते

वो किसी दुसरे को भी मत दो.

इन्शान हमेशा जिन्दगी में दो चीजो से हारता है,

पहला वक्त और दूसरा प्यार,

वक्त कभी किसी का नहीं होता

और प्यार हर किसी से नहीं किया जा सकता.

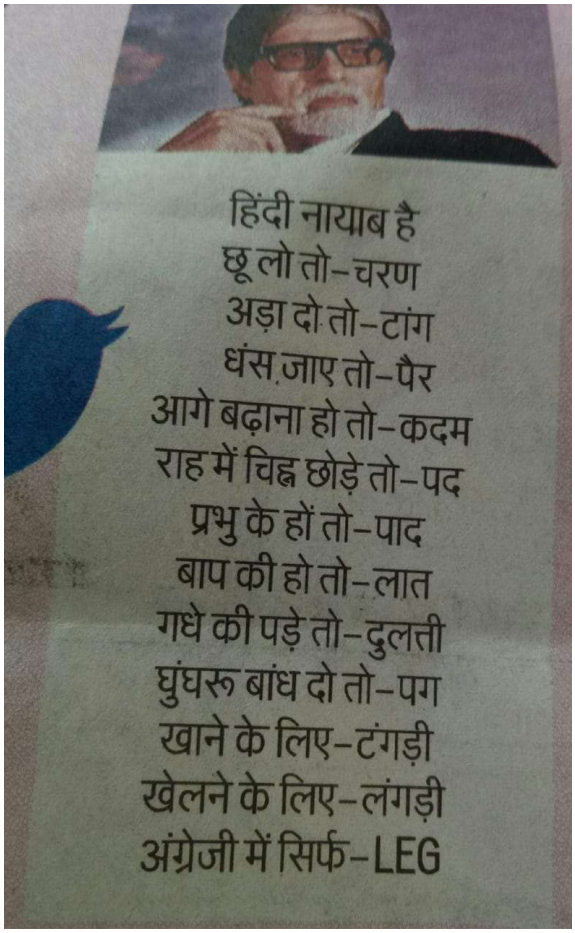

एम. मैमून मोघल
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

हिंदी शब्द खोज

Wordsearch, in Hindi. If you've got 10 minutes to spare then why don't you try it out! How many words can you find? Just like a normal wordsearch words can read up, down, left, right and diagonally!

For example, the first word search answer is highlighted in red. ह HA + आ AA + थ THA + ई EE = हाथी HAATHEE - Elephant. Note that in the wordsearch the vowels are written separately but then they join to the consonants when you form a word (this might be a little tricky, but you should get the idea!) Go on, give it a go…

ह	फ	घ	र	आ	ग	क	र	न	आ
आ	ल	ऊ	ऋ	प	ख	उ	च	म	स
थ	य	प	आ	न	ई	त	आ	औ	आ
ई	ह	भ	न	क	ग	त	ह	स	फ़
न	ई	ल	आ	य	र	ए	इ	म	स
थ	क	आ	श	आ	म	छ	ए	क	ए
च	इ	ड़	ई	य	आ	झ	ओ	व	ब
क	आ	ह	आँ	र	आ	य	प	ट	ह
क	ल	इ	ख	न	आ	म	ए	र	आ

http://www.learning-hindi.com

"विचार से कार्य की उत्पत्ति होती है, कर्म से आदत की उत्पत्ति होती है और चरित्र से आपके भाग्य की उत्पत्ति होती है।"

के. वेंकटेस्वरी
वरिष्ठ आशुलिपिक
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

~ सभी ग्लिटर गोल्ड नहीं ~

हमारे जीवन काल में हम बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि सभी चमकदार सोने नहीं हैं .इसके बावजूद ,हम चमकती वस्तुओं के प्रति आकर्षित होते हैं .हम सब इस गंतव्य तक पहुँचने केलिए दौड रहे हैं ,जहाँ जगह चमकता दिखाई देता है .दुर्भाग्यवश आखिर में हम खाली हाथों और खाली दिल से वापिस आते हैं.

हमारे चारों ओर देखें तो ,मीडिया में चमकदार विज्ञापन हमारे दिमाग को पकडता है .पहले ,हम अपने दांतों को नमक और कोयले से साफ करते थे .लेकिन चमकदार विज्ञापन आया ,हमारी अच्छी आदत को बदल दिया और आधुनिक पेस्ट उपयोग करने लगे .इसलिए ज्यादर लोगों का खासकर बच्चों के दांत क्षितग्रस्त होने लगे ,और कंपनीवाले पूछते हैं क्या आपके पेस्ट में नमक नहीं है ?ऐ सब हमारे आस-पास हो रहे वास्त्विक तथ्य हैं .

यही नहीं ,एक तरफ चमकता पिज्जा ,एजनोमोटो तलाहुआ चावल ,रंगीन गोबी मंचूरियन ,प्याज टॉपिंग पिज्जा ,पनीर रोटी ,स्वादिष्ठ कुरकुरे की चमकदार प्रस्तुतियाँ और दूसरी तरफ इनकी आकर्षक कवर जो उडान भरती हैं जो बेहद हानिकारक हैं .खासकर कुरकुरे कैंसर का प्रथम कारक है .सुंदर glittered कुरकुरे कैंसर का बन गया .इसलिए कहती हूँ सभी ज्लिटर गोल्ड नहीं.

टी.वी .धारावाहिकों को देखकर सभी युवक एवं युवती शादी केलिए सिनेमा नायकों और नायिकाओं की तरह सफेद चर्म वालों को ही पसंद कर रहे हैं .भारतीय अपने स्वदेश की त्वचा का रंग भूल रहे हैं . आकर्षण और चमक खतरनाक हैं .टी.वी .में देखकर कैमिकल्स युकत फेयर एंड लवली ,निविया ,पांड्स जैसे क्रीमों का उपयोग कर रहे हैं .हम भारतीय अद्भुत स्वस्त ,सुगंधित हल्दी का उपयोग करना ही भूल गए . सभी चमक सोने नहीं है.

आजकल मीडिया ,विज्ञापन ,धारावाहिक पात्र ,पर्यावरण विकास हमारी जीवनशैली काफसला कारते हैं . जब मैं छोटी थी मेरी माँ का घर मेरेलिए फार्महाउस जैसे था ,लेकिन आज मैं एक फार्महाउस खरीदने केलिए मेरी माँ का घर बेच रही हूँ ,जो मेरे घर से100 कि.मी .की दूरी पर है .कोई सी बी एस ई नहीं ,कोई बडा विज्ञानी है लेकिन फिर भी किसी तरह से सरकारी नौकरी में बस गए हैं .लेकिन अब ,आराम नहीं ,केवल कडी मेहनत ,केवल पैसा ,फिर धनौर धन ..... लेकिन हमारे बच्चों का निपटारा संतोषजनक नहीं है .

यह हमारी जीवनशैली कहाँ चल रही है ?इन सबसे छुटकारा पाने केलिए कृपया ग्लिटर की तरफ दौडें मत.

<u>इसलिए दुबारा कहती हूँ सभी ग्लिटर गोल्ड नहीं.</u>

प्रभात रंजन प्रेम
वरिष्ठ वैज्ञानिक
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

"हम हिंदुस्तानी सो रहे हैं"

जैसा समझाओ वैसे हो रहे हैं ...हम हिंदुस्तानी सो रहे हैं

सरहदें छोटी हो गयीं , देश कुंठित हो रहा

सही राज-काज के आभाव में पूरा मुल्क रो रहा !

जवानों की शहादत पे ही कुछ तो सोच लो

या फिर आदत डालो और अपने आंसूं पोछ लो।

पडोसी घर के हो रहे हैं ,अपने ही घर में हम किरायेदार हो रहे हैं।.

जैसा समझाओ वैसे हो रहे ...हम हिंदुस्तानी सो रहे हैं!

राजनीति का मतलब ही बदल रहा है .

अपना पैसा बनाना ही राजधर्म बन रहा है !

अपने जाति मज़हब के नेता को मसीहा कह रहे हैं

फिर उसे ही जिता कर के बेफिक्र सह रहे हैं ..

जैसा समझाओ वैसे हो रहे हैं....हम हिंदुस्तानी सो रहे हैं!

चक्र यूँही चलता ही जाता है हमारा समय कटता ही जाता है

पुनःनिर्माड का चक्कर यहीं पे समझ में आता है

जब एक पार्टी को परख के दुसरे को जिताता है।

लोकतंत्र मानो सिमट सा गया है.

राजतन्त्र दो तीन विकल्पों में ही फस गया है.

गरीबों की दशा को व्यक्तिगत लेता है कौन ??

पडोसी मुल्कों की हरकतों का जवाब देता हैं कौन ??

यही कुछ सवाल है जो हर देशवासी के जेहन में दबें रहते हैं हर पहर

चाहे वो रहता दिल्ली में हो,कश्मीर में हो या रहता हो किसी भी शहर।

मगर देश को सोने से फुर्सत कहाँ, कहते हैं आज़ाद हैं मगर आज़ादी कहाँ

आठ साल की बच्ची भी अब सुरक्षित नहीं

खुल के साँस ले सकें वो ऐसी जगह भी अब इक्षित नहीं.

कैसा देश कैसे देशवासी जब अपनी ही माँ बहनों को छोरते नहीं सन्यासी.

सड़क पे रुक नहीं सकते किस्सी को तड़पता देखके

सुर्ख़ियों में छाने के लिए दौड़ते हैं मोमबत्तियां लेके .

सिनेमा की हरकतों में फिर से खो रहे हैं हैं.

जैसा समझाओ वैसे हो रहे हैं .....हम हिंदुस्तानी सो रहे हैं !!!

प्रभात रंजन प्रेम
वरिष्ठ वैज्ञानिक
सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र

"हिंदुस्तानी का पिघला मन"

मैं देश की खातिर अपनी जान गवाऊं क्यूँ ??
मरने को जय भारत मैं चिल्लाऊं क्यूँ ??
जिससे खुद का तन हो घायल
मैं ऐसे भी तीर चलाऊं क्यूँ ??
जब बदन नुमाइश है फैशन
तो घर में परदे लटकाऊं क्यूँ?
इन भूंखों नंगों की दुनियां में.
मैं भी विकसित कहलाऊं क्यूँ ?
हमराह मरें जिनसे लाखों
फिर ऐसे असलाह बनाऊं क्यूँ?
जब इज्ज़त ही लुटे माँ बहनों की,
उस धरती के गुण गाउन क्यूँ ??

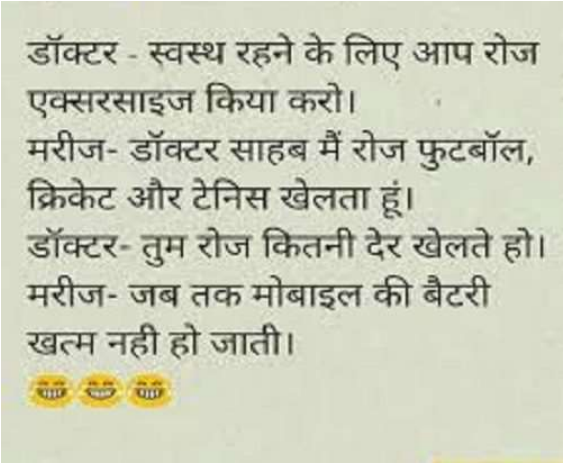

वाक्य-शुद्धि

1.	मेरे को अभी जाना है।	(मुझे)
2.	इतनी-सी बात पर वह मेरे से रूठ गई।	(मुझ से)
3.	तेरे को भी जाना चाहिए।	(तुझे)
4.	मैंने नहीं जाना।	(मुझे)
5.	आप आपका काम करो।	(अपना)
6.	वह लडकी को बुलाओ।	(उस)
7.	यह बात कोई को मत कहना।	(किसी)
8.	यह किताब का क्या मूल्य है?	(इस)
9.	बल्ब का आविष्कार कौन किया?	(किसने)
10.	यह (वह) सब भले लोग हैं।	(ये/वे)
11.	साहित्य और जीवन का घोर सम्बन्ध है।	(घनिष्ठ)
12.	भ्रष्टाचार गहरी समस्या है।	(गम्भीर)
13.	अधिकांश विद्यार्थी यहाँ उपस्थित हैं।	(अधिकतर)
14.	मुझे बडी भूख लगी है।	(बहुत)
15.	उसकी बहुत हानि होगी।	(बड़ी)
16.	यह मामला वास्तब में चिन्तनीय है।	(चिन्ताजनक)
17.	वे ऊँची-कोटि के विद्वान हैं।	(उच्चकोटि)
18.	दोनों पुस्तकों में कौन-सी उच्चतम है?	(उच्चतर)
19.	राजेश अग्रिम मंगलवार को आएगा।	(आगामी)
20.		

21.	राहुल पत्र लेकर भागता हुआ घर आया।	(दौड़ता)
22.	मंत्री जी ने भाषण बोला।	(दिया)
23.	पिताजी ने कहा, "तुम दिल्ली कब जा रहे हो?"	(पूछा)
24.	स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम अवश्य लेना चाहिए।	(करना)
25.	फेल होने की खबर सुनकर उसकी चेहरा गिर गया।	(उतर)
26.	विदेशियों ने अनेकों बार भारत पर आक्रमण किया।	(अनेक बार)
27.	एक विद्यार्थी को दो पुस्तक मिलेंगी।	(पुस्तकें)
28.	अपने भाइयों का नाम बताओ।	(के)
29.	अपने-अपने घरों से आ जाना।	(घर)
30.	इतना कहते ही अनिल का प्राण निकल गया।	(के/गये)
31.	रोहित ने घर को बनवाया।	(घर)
32.	वह अपने दोस्त को मिलने गया।	(से)
33.	भाइयों और बहनों! हमें मिलकर भ्रष्टाचार का विरोध करना होगा।	(भाइयो और बहनो)
34.	चिड़िया पेड़ में बैठी हैं।	(पर)
35.	यह बात वह भूल नहीं सकता।	(इस बात को)
36.	वे परस्पर एक दूसरे से उलझ पड़े।	(परस्पर/एक दूसरे से)
37.	प्रात:काल के समय भ्रमण उपयोगी रहता है।	(प्रात:काल/प्रात:समय)
38.	नौजवान युवकों को दहेज-प्रथा का विरोध करना चाहिए।	(नौजवानों/युवकों)
39.	चिड़ियाँ गा रही हैं।	(चहक)
40.	बाण बड़ा उपयोगी शस्त्र है।	(अस्त्र)
41.	लाठी बड़ी उपयोगी अस्त्र है।	(शस्त्र)
42.	कर्मवान व्यक्ति को सफलता अवश्य मिलती है।	(कर्मवीर)
43.	माँ की आज्ञा के अनुकूल वह सो गया।	(अनुसार)

44.	जब आप आओ तो उसे भी साथ ले आना।	(तब)
45.	जब भी आपकी इच्छा हो, आ जाना।	(जब कभी)
46.	देश में सर्वस्व शांति होनी चाहिए।	(सर्वत्र)
47.	तूफान में सौ लोगों के मारे जाने की आशा है।	(आशंका)
48.	उसने चोरी की, लेकिन उसे पकड़े जाने का संदेह है।	(भय)
49.	चौकीदार पर ही चोर होने की शंका है।	(का संदेह)
50.	विद्या समाप्त करके ही वह नौकरी करेगा।	(शिक्षा)
51.	बस रुकते ही यात्री उतरकर पानी की चाह में इधर-उधर घूमने लगे।	(खोज/तलाश)
52.	कोलम्बस ने अमेरिका का आविष्कार किया।	(की खोज की)
53.	एडीसन ने बल्ब का निर्माण किया।	(आविष्कार)
54.	हमारे देश का विकास हिमालय से हिन्द महासागर तक है।	(विस्तार)
55.	शर्मा जी को मीटिंग का समाचार भेज दो।	(की सूचना)
56.	हमें भाषा का अच्छा बोध होना चाहिए।	(ज्ञान)
57.	मेरी नाम राम/सीता है।	(मेरा)
58.	आप यह काम करो।	(कीजिए)
59.	उसने नहाया ।	(वह)
60.	आप शनिवार के दिन चले जाएं ।	(को)

"बेहतर काम न करने की वजह या वक्त न होने का बहाना मत बनाइयें, आपका दिन भी २४ घंटे का ही होता है और सफल लोगो का भी।"

मुहावरे

क्र. सं.	मुहावरे	हिंदी में अर्थ	अंग्रेज़ी में अर्थ
1.	अपना रंग जमाना	प्रभावित करना	To Inspire
2.	अन्तर-पट खुलना	ज्ञान प्राप्त होना	To gain knowledge
3.	अन्न को कन्न करना	बनी बात को बिगाड़ना	To spoil something / to disgust somebody
4.	अक्ल मारी जाना/अक्ल पर पत्थर पड़ना	बुद्धि भ्रष्ट होना	To become non-sense
5.	अंग-अंग फूले न समाना	आनन्दविभोर होना	To become excited/very happy
6.	अंगूठा दिखाना	इन्कार करना	To deny something
7.	अंग छूना	कसम खाना	To make promise
8.	अंगार सिर पर धर लेना	कठिन विपत्ति सहना	To take risk/to bear difficulties
9.	अंक भरना	स्नेह करना	To be affectionate/to love
10.	अंगार बरसना	कड़ी धूप होना	More sunny/heat
11.	आगा-पीछा करना	हिचकना	To hesitate for something
12.	आसमान पर चढ़ाना	अत्यधिक प्रशंसा करना	Exaggerated praising
13.	आँख लगना	नींद आना	To feel sleepy/to be tired
14.	आँख खुलना	होश में आना	To become conscious
15.	आँख दिखाना	क्रोध करना	To be angry/emotional
16.	ईंट से ईंट बजाना	नष्ट करना	To make loss
17.	ऊँट किस करवट बैठे	निश्चित परिणाम न होना	Not to decide
18.	उंगली उठाना	दोषारोपण करना	To blame somebody
19.	उन्नीस-बीस होना	लगभग समान होना	To become equal/similar

20.	एक ही लकड़ी से हाँकना	अच्छे बुरे की पहचान न करना	Not identifying good and bad
21.	एड़ी-चोटी का पसीना एक करना	घोर परिश्रम करना	To work hard
22.	ओखली में सिर देना	स्वयं संकट मोल ले लेना	One getting into problem by himself
23.	औंधी खोपड़ी	मूर्ख होना	To become fool
24.	उल्टे बाँस बरेली को	विपरीत काम करना	To work adversely
25.	कमर सीधी करना	थकावट दूर करना	To get rid of tiredness
26.	काम निकलना	प्रयोजन सिद्ध होना	To get a work done
27.	कुर्सी तोड़ना	मेहनत न करना	Not working/lazy/simply sitting
28.	कान पकड़ना	भूल स्वीकार करना	To accept a mistake
29.	कटे पर नमक छिड़कना	दु:खी व्यक्ति को और अधिक दु:खी करना	To make somebody more worried
30.	कंधा लगाना	सहारा देना	To help
31.	कन्नी काटना	बचकर निकल जाना	To get relieved
32.	कंधे से कंधा मिलाकर चलना	परस्पर सहयोग से काम करना	To work with mutual coordination
33.	कच्ची गोलियाँ न खेलना	अनुभव की कमी न होना	Inexperienced deeds
34.	कलेजा निकाल कर रखना	हृदय की बात कह देना	Open minded talk
35.	कलई खुलना	भेद प्रकट हो जाना	To discriminate
36.	खून खौलना	बहुत क्रोधित होना	To become angry
37.	खोपड़ी खाना	व्यर्थ बातें करके परेशान करना	To disturb others wasting their time through unnecessary talk
38.	गले पड़ना	पीछे पड़ना	To follow continuously disturbing
39.	गाजर-मूली समझना	निर्बल समझना	Thinking somebody is weak
40.	गोली मारना	उपेक्षापूर्वक त्याग करना	To ignore somebody

~ राजभाषा से संबंधित कुछ मुख्य बातें ~

- संपूर्ण भारत में अधिक से अधिक जनसंख्या द्वारा बोली एवं समझी जानेवाली भाषा हिन्दी ही है।
- भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा की मान्यता दी गयी।
- हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने के पीछे यह वैज्ञानिक बात जरूर है कि हिन्दी जिस प्रकार लिखी जाती है उसी प्रकार बोली जाती है। यह हिन्दी भाषा की विशेषता भी मानी जाती है।
- भारतीय संविधान में धारा 3(3) के अनुसार संघ सरकार की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी। और संघ के कामकाज में भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूपों का प्रयोग होगा।
- राजभाषा अधिनियम धारा 1963, 3(3) के अनुसार निम्न दस्तावेज द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाने चाहिए। सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, संकल्प, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संसद के किसी ज्ञापन या दोनों सदनों के सामने रखी जानेवाली प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट, संविदाएँ, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, टेंडर नोटिस, टेंडर प्रपत्र इत्यादि दस्तावेज द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाने चाहिए।
- कार्यालय में सभी नाम पट्ट द्विभाषी (हिन्दी एवं अंग्रेजी) या त्रिभाषी में (प्रादेशिक भाषा, हिन्दी एवं अंग्रेजी) में होना चाहिए।
- पहचान कार्ड, परिचय कार्ड, हिन्दी एवं अंग्रेजी में (द्विभाषी रूप में) होना जरूरी है।
- फाइल आवरण, पत्र शीर्षक आदि द्विभाषी में होने चाहिए।
- सभी तरह के रजिस्टर के शीर्षक, उपशीर्षक, मानक प्रपत्र, आवेदन पत्र, मांग-पत्र, अनुमति-पत्र, द्विभाषी होने चाहिए।
- सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे कंप्यूटर आदि में हिन्दी में टाइप करने की सुविधा होने चाहिए।
- प्रशासन अधिकारी, भंडार & क्रय अधिकारी एवं वित्त & लेखा अधिकारी और अन्य अधिकारियों से बनी एक जाँच समिति का गठन किया जाए। जिसके द्वारा भण्डार में खरीदी जानेवाली लेखन सामग्री, इलेक्ट्रॉनिक सामग्री, कंप्यूटर इत्यादि का द्विभाषी रूप सुनिश्चित किया जाए।
- जब भी कोई समारोह, संगोष्ठी, कार्यशाला होते हैं तो उनके बेनर द्विभाषी रूप में बनाए जाने चाहिए। उनके निमंत्रण पत्र भी द्विभाषी रूप में बनाए जाने चाहिए।

- हर एक अधिकारी / कर्मचारी को निर्धारित हिन्दी ज्ञान का होना जरूरी है। यदि नहीं हो तो हिन्दी अनुभाग द्वारा नामित हिन्दी कक्षाओं में दाखिल होकर हिन्दी प्रशिक्षण को पूरा करना चाहिए।
- जब कार्यालय में कोई पत्र हिन्दी में लिखे प्राप्त होता है तो उनका उत्तर हिन्दी में ही दिया जाय।
- हिन्दी में लिखने पर होनेवाली भाषा सम्बन्धी गल्तियों / त्रुटियों पर कटाई से नहीं देखा जाएगा। उन्हें साफ किया जाएगा।
- कार्यालय में यथा-संभव अपना कार्य हिन्दी में करना चाहिए।
- कार्यालय का लोगो द्विभाषी रूप में हो।
- पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी में भी बनाया जाए।

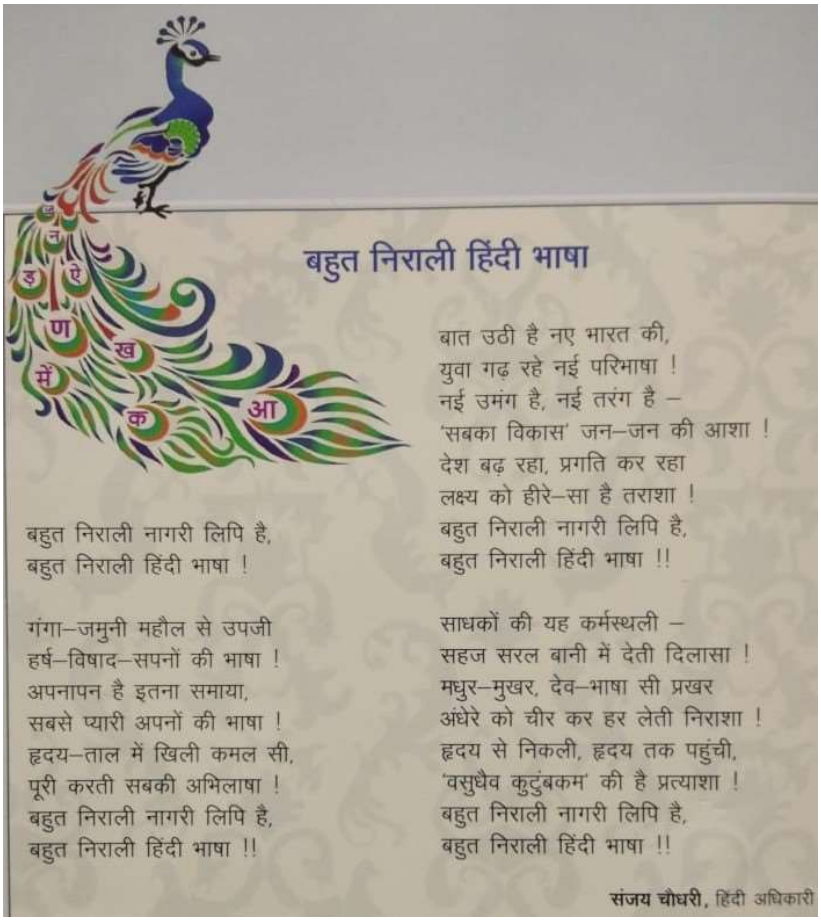

बहुत निराली हिंदी भाषा

बात उठी है नए भारत की,
युवा गढ़ रहे नई परिभाषा !
नई उमंग है, नई तरंग है –
'सबका विकास' जन–जन की आशा !
देश बढ़ रहा, प्रगति कर रहा
लक्ष्य को हीरे–सा है तराशा !
बहुत निराली नागरी लिपि है,
बहुत निराली हिंदी भाषा !!

बहुत निराली नागरी लिपि है,
बहुत निराली हिंदी भाषा !

गंगा–जमुनी महौल से उपजी
हर्ष–विषाद–सपनों की भाषा !
अपनापन है इतना समाया,
सबसे प्यारी अपनों की भाषा !
हृदय–ताल में खिली कमल सी,
पूरी करती सबकी अभिलाषा !
बहुत निराली नागरी लिपि है,
बहुत निराली हिंदी भाषा !!

साधकों की यह कर्मस्थली –
सहज सरल बानी में देती दिलासा !
मधुर–मुखर, देव–भाषा सी प्रखर
अंधेरे को चीर कर हर लेती निराशा !
हृदय से निकली, हृदय तक पहुंची,
'वसुधैव कुटुंबकम' की है प्रत्याशा !
बहुत निराली नागरी लिपि है,
बहुत निराली हिंदी भाषा !!

संजय चौधरी, हिंदी अधिकारी

~ तकनीकी शब्द सूची ~

अवशोषण	Absorption
समायोजन	Adjustment
हवा, वायु	Air
मिश्रधातु, एलॉय	Alloy
प्रवर्धक	Amplifier
विश्लेषण	Analysis
कोणीय चाल	Angular speed
वास्तुविद	Architect
परिसंपत्ति/संपत्ति	Asset
संघ	Association
असममित	Asymmetrical
असम कलिक	Asynchronous
वायुमंडल	Atmosphere
वायुमंडलीय दाब	Atmospheric pressure
परमाणु	Atom
परमाणु ऊर्जा	Atomic energy
परमाणु ऊष्मा	Atomic heat
औसत चाल	Average speed
अक्षीय	Axial
अक्ष	Axis
संतुलन, तुलन	Balance
संतुलित	Balanced
बेंगलूर विकास प्राधिकरण	Bangalore development

धरन, दंड	Beam
परिसीमा	Boundary
ईंट पथाई	Brick molding
क्षमता	Capacity
मध्य भारण	Central loading
अपकेंद्रीय	Centrifugal
चिमनी, धुआंरा, धुआंकश	Chimney
चीनी मिट्टी	China clay
परिपथ	Circuit
वृत्ताकार, वृत्तीय	Circular
मृत्तिका	Clay
संवृत परिपथ	Closed circuit
गुणांक	Coefficient
संकलनकर्ता	Compiler
संपीडन	Compression
संपीडक	Compressor
कंक्रीट	Concrete
कंक्रीट आधार	Concrete foundation
कंक्रीट मिश्रण	Concrete mixture
संघनन	Condensation
द्रवणित्र	Condenser
शंकू	Cone
संरूपण, विन्यास	Configuration
जोड़	Connection
निर्माण	Construction
परामर्शदाता, परामर्श याचक	Consultant

अविच्छिन्न, लगातार	Continuous
नियंत्रण	Control
संशोधन	Correction / Amendment
वक्र	Curve
विरूपण, विकृति	Deformation
विरूपित छड	Deformed bars
विरूपित संरचना	Deformed structure
निदर्शन, निरूपण	Demonstration
अभिकल्प	Design
अंकीय कंप्यूटर, अभिकलित्र	Digital computer
अंकीय प्रदर्श	Digital display
अंकीय अनुकार	Digital simulation
लम्बाई चौडाई, विस्तार, घात, विमा	Dimension
विमारहित समूह	Dimension group
विमीय विश्लेषण	Dimensional analysis
विमीय मापन	Dimensional measurement
विमीय समरूपता	Dimensional similarity
विमीय सहिष्णुता	Dimensional tolerance
विमांकन पद्धति	Dimensioning system
विमांकन तकनीक, प्रविधि	Dimensioning technique
विमारहित	Dimensionless
अमापकीय विमाएँ	Dimensions not to scale
प्रत्यक्ष माप	Direct measurement
प्रत्यक्ष/समक्ष अनुकार	Direct simulation
चक्रिका, डिस्क	Disc
डिस्क/चक्रिका वाल्व	Disc valve

वितरण	Distribution
विभाजनी	Divider
धार, कोर, किनारा	Edges
दक्षता	Efficiency
प्रभावी अभिकल्प	Efficient design
प्रभाव	Efforts
विद्युत परिपथ	Electric circuit
इलेक्ट्रॉनिक	Electronic
अभियंता	Engineer
अभियांत्रिकी	Engineering
समान	Equal
समानता	Equality
उपस्कर, उपयंत्र	Equipment
प्रयोगात्मक विश्लेषण	Experimental analysis
प्रयोगमूलक बलाधात विश्लेषण	Experimental stress analysis
विशेषज्ञ, निपुण	Expert
विस्तार	Extension
बाह्य	External
बाह्य परिपथ	External circuit
सुविधाएँ	Facilities
पंखा	Fan
रज्जु कोणी	Fermicular polygon
रज्जु कोण	Fermicular shell
वित्तीय सहायता	Financial support
प्रवाह	Flow
प्रवाह नियंत्रण	Flow control

प्रवाह आरेख	Flow diagram
प्रवाह ऊर्जा	Flow energy
प्रवाह पथ	Flow path
प्रवाह प्रक्रम	Flow process
उच्चावचन, ऊँचे-नीचे, इधर-उधर	Fluctuation
बल	Force
नींव, बुनियाद, आधार	Foundation
आवृत्ति	Frequency
घर्षण	Friction
ज्यमिति	Geometry
ऊष्मा, गर्मी	Heat
अधिक भारण	Heavy loading
अति चाल कंप्यूटर	High speed computer
छिद्र	Hole
भवन निर्माण प्रदर्शनी	Housing exhibition
हब	Hub
सूचक, इंडिकेटर	Indicator
औद्योगिक	Industrial
औद्योगिक भवन	Industrial Building
औद्योगिकरण	Industrialization
औद्योगिक भवन	Industrialized building
नवीन प्रवृत्तियाँ	Innovative trends
अधिष्ठापन	Installation
संस्थान	Institute
संस्था	Institution
मापन-यंत्र/माप-यंत्र	Instrument

विलगित, पृथक	Isolated
लाटो ब्लाक्स	Lato blocks
हल्का कंक्रीट	Light weight concrete
सीमा बंधन	Limitation
भार प्रवाह	Load flow
भारण	Loading
अनुदैर्ध्य	Longitudinal
स्नेहन	Lubrication
यंत्र/कल/मशीन	Machine
यंत्र	Machine
यंत्र का आधार	Machine foundation
माप	Measurement
सूक्ष्म कंक्रीट	Micro concrete
आशोधन	Modification
नमी, आर्द्रता	Moisture
नमी अवशोषण	Moisture absorption
गढाई, पथाई, संचकन	Molding
संचक, सांचा, संचकन	Mould
सांचित, संचकित	Moulded
गति, चाल	Movement
गारा	Mud
राष्ट्रीय भवन निमार्ण संगठन	National Building Organisation
राष्ट्रीय प्रयोगशाला	National Lab
संगठन	Organisation
समग्र आयाम	Overall dimension
नाम सूची, नामिका	Panel

नल, नली	Pipe
समतल	Plain
संयंत्र	Plant
प्लास्टर	Plaster
नीति बनानेवाले	Policy makers
स्थिति, स्थान	Position
पूर्वबलित	Pre stressed
पूर्व प्रतिबलित, पूर्व बलित	Pre stressed
प्रागुक्ति	Prediction
पूर्व निर्माण	Prefabrication
प्रक्रिया	Process
परियोजना	Project
भावी लेखक	Prospective authors
प्रारूप यंत्र	Prototype machine
आदि प्ररूप संरचना	Prototype structure
तिमाही	Quarterly
शीघ्र औद्योगिकरण	Rapid industrialization
अनुपात	Ratio, proportion
क्षेत्रीय केन्द्र	Regional Centre
प्रबलित कंक्रीट	Reinforced concrete
प्रबलन	Reinforcement
अनुसंधान	Research
अनुसंधान संस्थाएँ	Research institutions
प्रतिरोध	Resistance
पुन:बलित/पुन:प्रतिबलित	Restressed
छत	Roof

घूर्णन	Rotation
घूर्णी प्रवाह	Rotation flow
विज्ञान	Science
वैज्ञानिक	Scientific
संगोष्ठी	Seminar
सेवा उपस्कर	Service equipment
शैफ्ट	Shaft
रूप, आकार	Shape
समरूप	Similar
समरूपता	Similarity
सरल यंत्र	Simple machine
सरलता	Simplicity
मिट्टी	Soil
चाल	Speed
स्थायित्व	Stability
मानक विमा	Standard dimension
विमा अंक	Standard figure
मानकीकरण	Standardization
मानक	Standards
स्थैतिक / स्थिर	Static
स्थैतिक भार	Static load
स्टेशन	Station
इस्पात	Steel
दृढ	Stiff
दृढकारी	Stiffner
दृढता	Stiffness

बल	Strength/force
प्रतिबल	Stress
संरचनात्मक	Structural
संरचनात्मक गतिकी	Structural dynamics
संरचना	Structure
प्रचुर, पर्याप्त	Substantial
सफल प्रकाशन	Successful publication
वहनीय निर्माण पर्यावरण	Sustainable built environment
प्रणाली	System
प्रणाली, पद्धति	System/procedure
तमिलनाडु आवास निर्माण बोर्ड	Tamilnadu Housing Board
प्रौद्योगिकी	Technology
तकनीकी	Technical
तापमान	Temperature
परीक्षण	Test
सैद्धान्तिक विश्लेषण	Theoretical analysis
त्रिविम	Three dimensional
संक्रमण	Transition
भूल चूक	Trial and error
वाल्व, नलिका, ट्यूब	Tube
सुरंग	Tunnel
द्विविम	Two dimensional
अप्रतिबलित*	Un reinforced
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम	UNDP
वाल्व	Valve
वेग	Velocity

कंपन	Vibration
परियादार कोश	Waffle shell
परियादार पट्ट कोश	Waffle slab shell
तरंग	Wave
वायु	Wind

"शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पता है। शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है।"

~ हिंदी पक्ष समारोह 2018 ~

सौर ऊर्जा में तनु परत (Thin Film) का उपयोग
महावीर कुमार जैन
सह-प्राध्यापक (Asso. Prof.),
भौतिकी विभाग (Physics Deptt.)
दिनांक : सितम्बर 24, 2018

हिन्दी पक्ष समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION
10 - 24 सितंबर September, 2018

हिन्दी पक्ष समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION
10 - 24 सितंबर September, 2018

~ राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक ~